शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 6 | उदयपुर शनिवार 01 अप्रेल 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

उदयपुर में गुलाबी, हरी और पीली गणगौर की सवारी

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। लगभग दो सौ वर्षों से चला आ रहा गणगौर का त्यौहार तीन दिन तक गुलाबी, हरी और पीली गणगौर के रूप में आयोजित हुआ। विभिन्न समाजों की महिलाएं अपने सिर पर गणगौर-ईसर की काष्ठ प्रतिमाएं लेकर जुलूस रूप में गाजेबाजे के साथ शहर के विभिन्न मार्गों से होती हुई अंत में पीछोली के गणगौर घाट पहुंची। विदेशी सैलानियों भी इस अनूठे आयोजन के सुंदर व भव्य नजारों को देख अभिभूत हुए बिना नहीं रहे।

गणगौर के साथ फोटो और वीडियो लेने की होड़ रही। गणगौर पूजन की सालों पुरानी परम्परा ने नारी शक्ति और भक्ति का साझा संदेश दिया। शोभायात्राओं में नारी सशक्तीकरण, पानी बचाओ, पर्यावरण बचाओ, बेटी बचाओ आदि की तख्तियां थामकर त्योहार की समसामयिकता सिद्ध की और समाज की बुराइयों को खत्म करने संदेश दिया। गणगौर घाट पर महिलाओं ने गणगौर गीतों पर घूमर नृत्य किया। ईसर, गणगौर व कानूड़ा की प्रतिमाओं को पुष्प से जल आचमन और जल कुसुंभे देने की रस्म निभाई।

फिर गीत गाते हुए उसी ठाठ-बाट से गणगौर की प्रतिमाओं को शोभायात्रा के साथ अपने-अपने गंतव्य स्थानों पर ले जाया गया। बालिकाओं, युवतियों और महिलाओं के समूह गीत गाते हुए सेवरे लेने गए। सेवरों को लेकर युवतियां व बालिकाएं गणगौर के पूजन स्थल पर पहुंची,जहां पर कुंवारी कन्याओं ने सुयोग्य वर तथा सुहागिनों ने पति की दीर्घायु की कामना को लेकर पूजा अर्चना की। गणगौर पूजन के बाद कथाएं सुनी।

घरों में महिलाओं ने आटे से रखड़ी, अंगूठी, कंगन सहित सोलह श्रृंगार के आभूषण तैयार किए और ईसर व पार्वती से सौभाग्य की कामना की।

राजेन्द्र हिलोरिया ने बताया कि गणगौर की सवारी में कहार भोई, फूल-माली, राजपूत लोधा, डाकोत, कलाल-पूर्बिया, खटीक, वसीटा, मारू कुमावत, क्षत्रिय जीनगर, मारवाड़ी गांछी आदि समाजों की गणगौरें शामिल हुईं। कहा जाता है कि पीछोला में गणगौर की नाव की सवारी महाराणा सज्जनसिंह ने प्रारंभ की। इस संबंध का आज भी महिलाओं के कंठों से यह गीत सुनने को मिलता है- हेली नाव री असवारी सज्जन राण आवे छै / सज्जन राण आवे छै हिन्दुवां भाण आवे छै।

नाव की शाही सवारी बंशी घाट से गणगौर घाट तक निकाली गई। इसके तहत नाव में गणगौर की प्रतिमा विराजित की गई। नाव में पारंपरिक वाद्य यंत्रों की थाप पर लोककलाकार नृत्यों की प्रस्तुति दे रहे थे। यह सवारी झील का चक्कर काटकर वापस अपने गत्वंय स्थान पर पहुंची।

वाचिक परम्परा में संस्कृति की संवेदनाएं

-वसंत निरगुणे-

संस्कृति में समस्त चराचर सृष्टि शामिल होती है। सारा लोक और ब्रह्माण्ड उसका हिस्सा होते हैं। मनुष्य संस्कृति का निर्माता और उसका सजग संवाहक है। जिस वस्तु, विचार और आचार का मनुष्य सृजन करता है, वह संस्कृति का हिस्सा हो जाता है। संस्कृति मनुष्य के विचारों और आचारों का समुच्चय होती है। वे आचार-विचार वाचिक परम्परा में अभिव्यक्त होते हैं।

संस्कृति और कला जीवन के सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं। दोनों का मकसद जीवन को संवारना है। दोनों ही मनुष्य के भीतर से पैदा होती हैं। यह कार्य मनुष्य के भीतर की प्रकृति करती है। बाहर की प्रकृति उसकी संस्कृति को रचने में उत्प्रेरित करती है। जीवन और प्रकृति मिलकर संस्कृति का निर्माण करती है। उसमें पशु-पक्षी से लगाकर छोटे से छोटे सूक्ष्म जीवाणु-जीवजन्तु, कीड़े-मकोड़े भी शामिल होते हैं। संस्कृति में समस्त चराचर सृष्टि शामिल होती है। सारा लोक और ब्रह्माण्ड उसका हिस्सा होते हैं। मनुष्य संस्कृति का निर्माता और उसका सजग संवाहक है। प्राचीन संस्कृति में से नई संस्कृति का जन्म भी मनुष्य की आवश्यकता पर निर्भर करता है।

विभिन्न संस्कृतियों का योग भी यौगिक संस्कृति का कारण होता है। संस्कृति सदैव संवेदनशीलता की भूमि पर खड़ी होती है। उसके बंध इतने लचीले होते हैं कि किसी भी विजातीय संस्कृति के प्रभावशील तत्व उसके घेरे में आ सकते हैं। यहां दो बातें बहुत स्पष्ट रूप से समझने की जरूरत है कि संस्कृति के निर्माण में उसको प्रभावित करने वाले तत्व अलग होते हैं। पशु और मनुष्य में सबसे बड़ा फर्क यही है कि पशु कोई संस्कृति निर्मित नहीं कर सकता जबकि मनुष्य संस्कृति का निर्माण कर सकता है।

संस्कृति के निर्माण में मनुष्य का विवेक काम करता है। पहले पहल जब मनुष्य मिट्टी और घास-बांस-लकड़ी के घर में रहने लगा, तब वह मिट्टी के बर्तन और वस्त्र बनाने लगा। संभवतया कला का जन्म भी मनुष्य यानी स्त्री-पुरुष के समन्वित प्रयास से हुआ। इसका मतलब हाथ और पैरों से किये जाने वाले श्रम की महत्ता की प्रतिष्ठा जीवन में मनुष्य ने पहले ही कर ली थी। आदिमानव को सबसे पहले श्रम भोजन प्राप्ति के लिए करना पड़ा होगा। शिकार का पीछा करने के लिए पैरों और हाथों की गति को बढ़ाना, शिकार के पीछे दौड़ना, हाथों में पत्थर के पैने टुकड़े रखना, उन टुकड़ों की निर्माण प्रक्रिया में ही मानव-कला का प्रादुर्भाव छिपा है। पत्थरों से अग्नि पैदा करने में, पेड़-पौधों के पत्तों को जोड़कर तन ढकने में आदिमानव को जो श्रम करना पड़ा वही श्रम विज्ञान और कला का जन्मदाता रहा है।

प्रकृति की रहस्यात्मक गतिविधियों का प्रभाव मनुष्य के मानस और अवचेतना पर निरन्तर पड़ा और उसके रहस्यों को जानने की अथक जिज्ञासा उसके मन में रही। प्राकृतिक शक्तियों पर नियंत्रण पाने की कोशिश में अनेक प्रविधियों का आविष्कार होने का श्रेय भी मनुष्य को ही जाता है। धर्म, दर्श, अध्यात्म, साहित्य, कला और विज्ञान की रचना मनुष्य की इसी कोशिश का परिणाम कही जा सकती है।

रचनाशीलता की प्रवृत्ति होने के कारण मनुष्य प्रकृति के उपादानों की उपयोगिता को समझकर विज्ञान के सहारे भौतिक सामग्रियों का निर्माण और कला के विभिन्न आयाम रचता आया है। जिस वस्तु, विचार और आचार का मनुष्य सृजन करता है, वह संस्कृति का हिस्सा हो जाता है। संस्कृति मनुष्य के विचारों और आचारों का समुच्चय होती है। वे आचार-विचार वाचिक परम्परा में अभिव्यक्त होते हैं।

संस्कृति मनुष्य के कई बौद्धिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, कलात्मक और रचनात्मक, कार्य-कलापों से प्रकट होती है। यहां तक कि मनुष्य के चलने-फिरने, उठने-बैठने, बोलने-चालने, पहनने-ओढ़ने तक से संस्कृति पहिचानी जा सकती है। लोक में कोई व्यक्ति, समाज और देश बिना संस्कृति के संभव नहीं है।

यहां तक कि जीवन में काम आने वाली भौतिक वस्तुओं में भी संस्कृति के मूल चिन्हों की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। भौतिक सामग्री में पुरानी से पुरानी और नई से नई संस्कृति और कला के स्मृति चिन्ह मिल सकते हैं।

मिट्टी, लकड़ी, पत्थर, धातु आदि में उकेरे विभिन्न जातीय रूपाकार मनुष्य की ऐतिह्य और पुरा संस्कृति के सबूत होते हैं। विश्व की प्राचीन संस्कृतियों के चिन्ह इन्हीं पुरा अवशेषों से मिले हैं, जिनके आधार पर उस काल की स्थापत्य कला-संस्कृति के और इतर बाह्य तथा आन्तरिक अनुषंगों की पहचान होती है।

संस्कृति संस्कार से बनती है। संस्कार जो जीवन को संजोने का कार्य करते हैं। मनुष्य के जन्म से लगाकर मृत्युपर्यन्त जीवन में कुछ न कुछ ऐसा अमूल्य जोड़ते चलते हैं, जिससे संस्कृति समृद्ध होती चलती है। बहुत से संस्कार मनुष्य ने कलानुष्ठानों में इस तरह बुने हैं जो कलानुशासन को गति प्रदान करने का काम करते हैं।

स्मृतियों के शिखर (29) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कठपुतलियों का विश्व विजेता तोलाराम

भाग्य सदा ही फलवान होता है किंतु सबका और सब समय एक नहीं होता। छोटी जाति और छोटे लोगों के भाग्य कब खुलते हैं और कब किस मोड़ पर जाकर दस्तक देते हैं, इसकी स्वयं व्यक्ति को ही भनक नहीं लगती। तोलाराम जाति से मेघवाल होकर नहीं कुछ से बहुत कुछ हो जायेगा, यह उसके लिए भी सबसे बड़ा आश्चर्य है।

सन् 1932 में उदयपुर में जन्मा तोलाराम अपनी माता हूड़ीबाई और पिता चतुर्भुज के साथ कमठाणे के काम में बचपन से ही लग गया। प्रतिदिन उनके साथ मकान अथवा सड़क निर्माण में काम कर मजदूरी करता तब ही उसे पेट भर खाना नसीब होता। ऐसा करते एक हवा ऐसी आई जब तोलाराम को तत्कालीन महाराणा भूपालसिंह के फर्राशखाने में काम मिल गया। जहां भी महाराणा का पधारना होता वहां तम्बू आदि लगाने का काम करते-करते तोलाराम नाच की ठुमकियां लेने लग गया। उसका नाच धीरे-धीरे सामंतों और जागीरदारों की सराहना पाते-पाते महाराणा तक जा पहुंचा।

महाराणा की शिकारों में जनाना नाच :

पहलीबार जब महाराणा ने तोलाराम का नाच देखा तो वे बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि यह छोरा बड़ा गुणी लगता है। इसका नाक नक्श भी अच्छा है। यदि यह जनाना नाच करे तो अधिक अच्छा लगेगा और हुआ भी यही। तोलाराम ने फर्राशखाने में 1945 से 1950 तक काम किया। इस बीच कई बार विशिष्ट अवसरों पर उसका नाच रखा गया। कई बार महाराणा के जहां-जहां भी डेरे लगे, खासकर शिकारों के तब तोलाराम ने जनाना नाच दिखाकर महाराणा का मनबहलाव किया।

एकबार जयपुर के राजा मानसिंह तथा जोधपुर दरबार हनुवंतसिंह के लिए महाराणा भूपालसिंह ने पीछोला स्थित जगमंदिर में नृत्य का कार्यक्रम रखा। उनके लिए बाहर से छह नचनियां बुलाई गई। सबसे पहले तोलाराम का पणिहारी नृत्य रखा गया। तोलाराम अपने जनाने वेश में बड़ी सजधज के साथ ऐसा नाचा कि कोई उसे पहचान नहीं पाया और हुआ यह कि उस पूरे कार्यक्रम में तोलाराम ही नाचता रहा और नचनियां बैठी की बैठी रह गई। महाराणा भी नहीं जान पाये कि वह तोल्या था। बाद में जब उन्हें पता लगा तो बड़ी शाबासी कहलवाई और कोर किनारी वाला पूरा वेश, रखड़ी, तुलसी, बाजू तथा कुरती के लगाने के सोने के बटन बख्शीस में दिये। ऐसी बख्शीसें तोलाराम ने न केवल महाराणा से बल्कि महारानी साहिबा, सामंतों, सरदारों तथा उनकी जनाना सरदारों से भी प्राप्त की।

इसी तरह एकबार महाराणा का चित्तौड़ बिराजना हुआ। स्टेशन के पास भोपाल भवन में तोलाराम का नाच ऐसा छाया कि उदयपुर से चलनेवाली रेलगाड़ी के ड्राईवर ने गाड़ी ही रोक दी। उसमें बैठी सभी सवारियां वह नाच देखती रहीं। लोग कहने लगे कि राणाजी के ठाठ का क्या कहना। वे जहां बिराजते हैं, वहीं उदयपुर बस जाता है। यह घटना सन् 1945 की है। सन् 1952 में जब भारतीय लोककला मंडल की स्थापना हुई तब उसके संस्थापक देवीलाल सामर ने तोलाराम को कलाकार के रूप में अपने यहां रख लिया। यहां रह तोलाराम ने लोकनृत्यों, नृत्य नाटिकाओं तथा कठपुतली प्रदर्शनों में मुख्य कलाकार की भूमिका का निर्वाह करते 1996 तक अपनी सेवाएं दी और न केवल पूरे देश में अपितु विदेशों में भी कई जगह प्रदर्शन देकर बड़ा यश और लोकप्रियता अर्जित की।

कलामंडल में प्रदर्शनों की धूम :

तोलाराम ने बताया कि कलामंडल के प्रदर्शन देश के कई बड़े शहरों और गांवों में तो हुए ही किंतु राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री तथा भारत सरकार द्वारा आमंत्रित अति विशिष्ट अतिथियों के सम्मुख भी हुए जिनमें रूस के मार्शल बुल्गानिन तथा ख्रुश्चेव, इण्डोनेशिया के प्रधानमंत्री, यूनेस्को सम्मेलन के प्रतिनिधियों, उजबेकिस्तान के कलाकारों के अलावा समय-समय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों, विश्व कृषि मेलों में भी हमारे प्रदर्शनों ने धूम मचा दी।

भारतव्यापी प्रदर्शन :

कलामंडल द्वारा भवाई, तेराताल, वनवासी, फागुन, घूमर, घूमरा, कच्छीघोड़ी जैसे लोकनृत्यों ने पूरे देश की परंपरागत कला और संस्कृति की विरासत को संरक्षित एवं संवर्द्धित करने की प्रेरणा दी। इसी प्रकार लोकाधारित रंगतों की आधारशिला पर निर्मित नृत्यनाटिकाओं ने भी बड़ा नाम कमाया। तोलाराम ने इन नृत्यनाटिकाओं में अपनी नामचीन भूमिका में अमिट छाप छोड़ी। रासधारी में लक्ष्मण, मूमल-महेन्द्र में महेन्द्र, पणिहारी में घुड़सवार नायक, म्हाने चाकर राखो जी में मीरां के पति भोजराज, ढोला-मारू में ढोला का अभिनय जिसने भी देखा वह आजतक उसकी याद लिए है। प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा ने तो मीरां नाटिका देखने के लिए उदयपुर से चलनेवाली ट्रेन ही छोड़ दी और बाद में उन्हें चित्तौड़ से बिठाने की व्यवस्था करनी पड़ी। उन्होंने कहा कि मीरां पर कई जगहों पर मैंने व्याख्यान दिये और बहुत कुछ कहा किंतु यहां जो कुछ देखा समझा वह मेरे मानस पटल पर अंकित हृदय द्रवित करनेवाला दृश्य ही है।

कठपुतली नाटिकाओं में तो तोलाराम ने कमाल ही कर दिखाया। नाटिका चाहे रामायण हो या लंगोटी की माया, संगठन में बल हो या वैशाली का अभिषेक, पचफूला हो या सुजाता ; तोलाराम ने इनके प्रदर्शन में कठपुतली धागों को अदृश्य बनद्ध अपनी अंगुलियों में संवारते जो अभिनय की बारीक ठुमकियां दी वह देश-विदेश के दर्शकों में दांतों तले अंगुली दबाना सिद्ध हुई। कठपुतली सर्कस जिसने भी देखा वह असली सर्कस को देखना भूल गया।

अंतर्राष्ट्रीय समारोह में सर्वोत्कृष्ट नाम :

यही नहीं, 21 सितम्बर 1965 को रूमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में कठपुतली का तीसरा अंतर्राष्ट्रीय समारोह आयोजित किया गया। इसमें बत्तीस राष्ट्रों के एक से बढ़कर एक 41 कठपतुली दलों ने भाग लिया। ऐसे दल भी आये जिनमें सौ-सौ कठपुतलियां और उन्हें नचानेवाले पचास तक कलाकार थे। प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने विशेष दिलचस्पी लेकर कलामंडल के कठपुतली दल को इस समारोह में भेजा।

समारोह से लौटकर सामरजी ने लिखा कि भारतीय पुतलियों ने पिछले 2000 वर्षों से जिस बात में विशेषता प्राप्त की है वह है उनकी उच्चकोटि की मनोरंजन प्रदायिनी शक्ति। राजस्थानी कठपुतली का सूत्रधार तथा ढोलक के माध्यम से पुतली नचाने वाली महिला पुतलियों से जिस मार्मिक ढंग से बात कराती है उसी में कठपुतली कला का चर्मोत्कर्ष निहित है।

राजस्थानी पुतलियों का अमरसिंह राठौड़ गेंद की सी आंखों तथा नन्हें उंगली विहीन हाथों में और पूरी आदमकदी तलवार लेकर कीड़े जितने बड़े घोड़े पर सवार होकर राजदरबार में आता है। नाट्य विधान, वाचन, गायन, प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से भी ये पुतलियां सीटी की आवाजों में गाती बोलती हैं और जमीन पर चलने के बजाय हवा में उड़ती हैं क्योंकि वे पृथ्वीलोक की पात्र नहीं हैं। वे किसी ग्रह से मायावी मनोरंजन के लिए पृथ्वी पर आई हैं।

पुतलियों का प्रभाव :

राजस्थानी पुतलियां इस समारोह में जब प्रथमबार टंडरिका थियेटर में अवतरित हुई तब दर्शकों को ऐसा लगा कि इन्द्रधनुष से उन्होंने अपने रंग चुराये हैं। चांद-सितारों से उन्होंने अपने आभूषण प्राप्त किए हैं तथा पवन से उन्होंने अपनी चाल सीखी है। नाचती गाती ठुमके भरती तथा नाना प्रकार के करतब करती हुई इन पुतलियों को देखकर दर्शक ही नहीं, बल्कि निर्णायकों की भी वर्षों की प्यास बुझ गई।

प्रदर्शन समाप्त होने पर बुत की तरह दर्शक प्रदर्शनगृह में बैठे रहते। उनसे कहा जाता कि प्रदर्शन समाप्त हो गया आप उठिये, तब वे उठते परन्तु वे अपनी शेष प्यास को रंगमंच के पीछे आकर भारतीय पुतलियों को देख-छूकर बुझाते।

-शेष पृष्ठ सात पर

रतन जतन कर राखजो ए मांय

चैत्र मास में होली के बाद कहीं सप्तमी तो कहीं अष्ठमी पर शीतला माता का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन ठण्डा खाया जाता है।

माता शीतला चेचक की देवी मानी जाती है। अत: औरतें एक रात पहले माता सम्बन्धी नाना गीत गाती हैं जिनमें माता का नखशिख वर्णन, उसका गुण गौरव, उसकी महिमा तथा बाल-बच्चों को सुन्दर स्वस्थ रखने की भावना व्यक्त की जाती है। इसी रात्रि को दूसरे दिन का खाना बना लिया जाता है जिसमें ढोकले, ओलिया, चावल, पूड़ियां तथा अमचूर, केल, सांगरी, वरकणे व कुरमुदे की सब्जी बनाई जाती है। प्रात: होने पर माता के लिए पूजापे की थाल सजाई जाती है जिसमें कुंकुम्, कूलर, मेंहदी, सुपारी, दही, ओलिया, पतासी, ढोकला, चावल, एक मुट्ठी धान, आटे के बने दीपक रखे रहते हैं। पूजा थाल लेकर नये वस्त्राभूषणों से सज्जित हो औरतें माताजी के थानक पर जाती हैं जहां माताजी के रूप में चेचकनुमे धांधले पत्थर पूजे जाते हैं। यहीं माताजी की पूजा के बाद छोटी-छोटी कंकरियां एकत्र कर पथवारी के रूप में पूजी जाती है। इस समय जो गीत गाये जाते हैं उनमें पारिवारिक ऋद्धि-समृद्धि सूचक भावनाएं देखने को मिलती हैं।

कहीं-कहीं शीतला के व्रत भी किये जाते हैं। व्रत करने के लिए औरतें दीवार पर सिन्दूर कुंकुम् का थापा बनाती हैं। थापों में कहीं गोलाई में माताजी के हाथ, सातिया, त्रिशूल एवं मेंहदी की सात बिन्दियां दी हुई होती हैं तो कहीं माता के वाहन गधे द्वारा गाड़ी खींचने का दृश्य बनाया जाता है। ये थापे बड़े कलात्मक, आकर्षक और धार्मिक अभिव्यक्ति के पोषक होते हैं। राजस्थान में इस त्यौहार पर स्थान-स्थान पर मेलों का भी आयोजन होता है जिनमें ग्रामीण लोग बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। लोकोत्सव के रूप में यह राजस्थान के प्रमुख पर्वों में से एक है।

-डॉ. कविता मेहता

देशी मिनरल वाटर

-हरमन चौहान

व्यंग्य

आजकल बाजार में हर कहीं मिनरल वाटर उपलब्ध है। सरकार ने इस गरीब देश में मिनरल वाटर उपलब्ध करवाकर हम पर बड़ा उपकार किया है। यह बोतलों में उपलब्ध है। देश में जल की कमी है। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण हर शहर की नगर पालिकाओं को पेयजल की आपूर्ति की बड़ी समस्या रहती है। हैण्ड पम्पों और कुओं का पानी खराब होता है। खराब पानी को उबालकर पीना भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। तब शुद्ध जल का मिनरल वाटर ही ठीक लगता है। लेकिन यह कुछ महंगा है। हम भारतीय सस्ते को रोते हैं।

गंगा नदी का जल जो कुछ अरसे पहले तक शुद्ध माना जाता था, अब उसे भी गंदा कर दिया गया है। अशुद्ध जल पीना 'आत्म-हत्या' के बराबर है। अपने स्वास्थ्य के प्रति जो सजग हैं, उनके लिए सस्ता मिनरल वाटर भी उपलब्ध है पर वह खरा नहीं उतर पा रहा है। 'मिनरल वाटर' में तरह-तरह के खनिजों का मिश्रण होता है। उसे उबाला जाता है। वाष्पीय किया जाता है। बाजार में कई मिनरल वाटर उपलब्ध हैं। इसके लिए एक अनाम कम्पनी ने एक विज्ञप्ति जारी की है।

देशी 'मिनरल वाटर' सभी जगह उपलब्ध है। बिल्कुल अनोखा। स्वाद में कसैला। सबको झूमा देने वाला। देशी भाषा में इसे 'ठर्रा, बेवड़ा, कंट्री, लट्ठा, मौवड़ी, खाट्या' आदि-आदि कहते हैं। विदेशी भाषा में एक ही नाम 'जीन' है। यह देश के किसी भी गांव, कस्बे, नगर या महानगर की तंग गलियों से लेकर झोंपड़पट्टियों में आसानी से मिल जाता है।

कई ट्रक ड्राईवर, मिल व कारखाना मजदूर, किसान, बेरोजगार, कड़के दादा, जिन्दगी से निराश, डंडेधारी, नौकरी-पेशा और आर्थिक बोझ से बोझिल या कुंठित सभी समान रूप से इसका उपयोग करते हैं। प्रतिवर्ष लाखों लोग इसे पीकर स्वर्ग में पहुंच रहे हैं। अब स्वर्ग में जगह सीमित रह गई है।

लाखों लोग इस मिनरल वाटर की आपूर्ति में लगे हुए हैं मगर सरकार इसे लघु-उद्योग का दर्जा नहीं दे रही है। यदि वह प्रोत्साहन दे तो गरीबी रेखा को मिटाया जा सकता है।

लेकिन अफसोस कि इस लघु-उद्योग पर सरकार उल्टे छापे डलवाती है। गिरफ्तारी कराती है और खुद अपना रंग-बिरंगा 'वाटर' सप्लाई कर करोड़ों कमाती है। सरकार सबके स्वास्थ्य के प्रति सजग है इसलिए सबको सावधान करती हुई हर बोतल पर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है लिख जनता के हित में समर्पण लिये है।

विवाह बाद स्पेन की हवा-हनी

भारत की तुलना में स्पेन का कल्चर बहुत फास्ट है। सभी अपने-अपने हाल में व्यक्ति केन्द्रित हैं तो स्वाभाविक है पारिवारिकता और आत्मीयता के जो हनी-सम्बन्ध भारत में देखने को मिलते हैं, स्पेन में या अन्यत्र भी ऐसे मून कहीं खिले नहीं मिलेंगे। कुल मिलाकर भारत तो भारत ही है।

20 जनवरी को विवाहोत्सव था। सभी औपचारिकताएं पूर्ण कर 3 मार्च को स्पेन के लिए, अनिशा और मैं उदयपुर से चले। दिल्ली से मेड्रीड नौ घंटे का हवाई सफर। उसमें राजधानी मेड्रीड और खूबसूरत शहर बार्सीलोना में चार-चार दिन व्यतीत करने की हवाई उम्मीदें भी मन में सुखद उत्साह भर रही थीं। मेड्रीड बड़ा ही सुन्दर साफसुथरा शहर है इसलिए सुखद लगा। हमारे देश में भी स्वच्छता पर सबकी व्यापक निगाहें सुखी जीवन को संकेतित कर रही हैं। लोग ठाले बैठे कहीं नहीं, द्रुत ताल लय में पुरुषार्थी बने श्रमशील हैं। सब अपने में, अपने हालचाल में हैं। पुलिस व्यवस्था 'मेरे योग्य सेवा' का दिखावा नहीं होकर वस्तुगत व्यवहारपरक, आक्रांत नहीं, स्नेहिल सेवा भावना की पराकाष्ठा लिए है। लोग कम हैं, सुविधाएं अधिक हैं। भीख मांगने की लाचारी हाथाजोड़ी कहीं नहीं, पैसा कमाने की चाह में गिड़गिड़ाहट नहीं अपितु अपना सार्थक हुनर और कौशल दिखाकर कमाने का करिश्मा है। एकल अथवा समूह रूप में कोई गिटार, कोई पियानो बजा कर बहला रहे हैं। जिसे सुनना हो सुनें। कुछ देना हो दें। जो दें, नहीं भी दें पर खुशमिजाज रहें।

मेड्रीड से बीर्सीलोना हाईस्पीड ट्रेन से मात्र दो घंटे में 800 किलोमीटर की यात्रा पूरी की। यह शहर भी उतना ही आनंद से लकदक। सड़कें सेम्पू से धुलती देखीं। भारत की सड़कों पर पैदल चलना दूभर। वहां दो लेन पैदलियों के, एक साइकिल सवारों के। चौराहे, बिल्डिंग्स बड़े मोहक सुहावने। जाने-आने की सब तरह की शानदार सुविधाएं। कहीं कोई ठगी, डकैती, असुरक्षा का भाव नहीं। भेदभाव नहीं। ऊंच-नीच का नाक भौं सिकुड़न नहीं। सब्जियां अच्छी ताजी मिलती हैं पर सभी नोनवेज खाने वाले। हम तो हमारे साथ मैगी, रेडी टू इट जैसा खाद्य पदार्थ ले गये। स्वयं पाकी बन चाह का खाना खाते रहे। कोई परेशानी नहीं रही।

-विकल्प मेहता

बालमन

टफी की याद

सब प्राणियों में कुत्ता सर्वाधिक वफादार होता है। यह सुन आरजू व तान्या एक पप्पी पालने की जिद्द कर बैठी। उनकी हर जिद्द पूरी करने वाले उनके पापा आखिर एक दिन एक पप्पी घर ले आये। महीने भर का वह पप्पी बहुत ही प्यारा था।

काला रंग, उसके लम्बे कान और छोटे पैर। नाम रखा 'टफी'। अपने नाम की पहचान उसे कुछ दिनों में ही हो गई। उसके कारण घर में एक अलग ही खुशी का माहौल छा गया। आरजू व तान्या के साथ वह इतना घुलमिल गया कि जैसे घर में तीन बच्चे हैं। लगता जैसे इन्सान के बच्चे की तरह ही उसकी हर अठखेली, हर शरारत, हंसना, रोना, रूठना, मचलना, खेलना, कूदाफांदी करना और भ्रमण के लिए बाहर निकलना एक जैसी हो गई।

बच्चे बड़े जो भी आता सबको वह अपनी तरफ बड़ा जल्दी आकर्षित कर लेता। अपने मालिक के घर आने का एहसास उसे सबसे पहले होता तब वह अपने छोटे-छोटे पंजों को किंवाड़ पर मारता और उसे खोलने का प्रयत्न कर उनके स्वागत के लिए आतुर रहता।

भूख लगने पर अपनी खाने की प्लेट को मुंह में दबाये मेरे पीछे घूमता। यों वह बहुत ही सीधा, सहज तथा संतोषी था। खाने में वह दूध-रोटी या फिर कढ़ी-रोटी बहुत पसंद करता। दिन-बर-दिन उसकी चुहलबाजियां बढ़ती जा रही थी। घर का कोई भी सामान मुंह में दबाये सबको दौड़ाता रहता था।

जैसे-जैसे वह बड़ा हो रहा था, हम यह महसूस कर रहे थे कि उसके लिए हमारे यहां पर्याप्त खुली जगह नहीं है जहां वह खूब दौड़-भाग कर सके। उन्हीं दिनों मिलने वाले हमारे घर आये। कुछ ही समय में टफी उनके साथ भी अति स्नेहिल हो गया। टफी पर उनका मन भर आया। वे चाहते थे कि कुछ दिनों टफी उनके घर का मेहमान बने जहां सब तरह की पूरी व्यवस्था है। उनका आपसी उमड़ाव आठ माह बाद ही हमसे बिछोह कर गया। टफी की सार संभाल उसे मन-मस्त कर रही है। जब भी आरजू व तान्या को उसकी याद आती है, वहां जाकर तीनों एक हो जाते हैं।

-शालू स्वामी

सबही बच्चे अच्छे

बच्चे तो सब ही अच्छे
सबके ही अच्छे
बाल-रूप भगवान-रूप होते हैं बच्चे।
हाथी चमगादड़ गीदड़ कंगारू मछली।
चांद सूरज तारे पत्ते पहाड़ गांव की नानी गली।
जमीकंद चर अचर और जड़ चेतन जो भी।
आंकड़ बांकड बाल लाड़ आता है तो भी।।
वाहरे लीला पुरुष धन्य है लीला तेरी।
तीनों लोक अरूप रूप में कहां लगाता फेरी।।

आर्ट को बढ़ावा देगा नरेंद्र भवन

उदयपुर। बीकानेर में एमआरएस ग्रुप के नए बुटीक होटल नरेन्द्र भवन ने महावीर स्वामी की पारंपरिक बीकानेरी पेंटिंग्स की प्रदर्शनी के साथ अपनी आर्ट गैलरी शुरु की गई है। महावीर स्वामी 1986 में राष्ट्रपति द्वारा मास्टर क्राफ्ट्समैन पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं। नरेन्द्र भवन, एक राजशाही निवास था जिसे होटल के रूप में तब्दील किया गया है। इसे जयपुर के पुरस्कार विजेता डिज़ाइन ग्रेजुएट आयुष कासलीवाल ने डिजाइन किया है। एमआरएस ग्रुप के प्रबंध निदेशक मानवेंद्रसिंह शेखावत ने कहा कि नरेंद्र भवन में आर्ट गैलरी की शुरुआत इसका स्वभाविक विस्तार है। इस होटल के मूल निवासी की प्रवृत्ति के अनुकूल, कला प्रदर्शनी के लिए एक विशेष स्थान उपलब्ध कराना, इस क्षेत्र की कला को संरक्षण और बढ़ावा देने में हमारा योगदान है। महावीर स्वामी ने कहा कि मैं नरेंद्र भवन की प्रबंधन टीम का आभारी हूं, जिन्होंने बारीक लकीरों और रंगों के लिहाज़ से अद्वितीय बीकानेर पेंटिंग शैली को समर्थन दिया है।

आदिवासी विकास के सरोकार

-डॉ. कहानी भानावत-

आदिवासियों के संबंध में उन विद्वानों ने अधिक लिखा है जो आदिवासी जीवनधारा से पूरे आत्मीयता से नहीं जुड़ पाये और जो आदिवासियों के लगातार सम्पर्क में भी नहीं रहे। इसका एक कारण यह भी रहा कि जिसने जो भी लिखा उसमें अपना निजी मंतव्य ही अधिक स्थापित करने की चेष्टा की। आदिवासी स्वयं की उसके पीछे क्या धारणा रही, इसे जानने की चेष्टा भी अधिक नहीं की। यह भी एक पक्ष रहा कि आदिवासियों को हमने बराबरी का दर्जा नहीं दिया और न ही यह सोचा कि कई दृष्टियों से वे हमारे से अधिक सामाजिक सरोकारों से जुड़े हुए हैं और अब भी उनमें तथाकथित नव संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा है।

वे अपने परंपरागत संस्कारों, जीवन यापन के दृष्टिकोणों, सामूहिकता के स्नेहशील व्यवहारों तथा समता समाज के दायित्वों के प्रति एक दूसरे के सुख-दुख के सहभागी बने हुए हैं। उदाहरण के लिए आदिवासियों के उद्भव के बारे में ही विद्वानों ने जिस तरह की जितनी स्थापनाएं दी हैं वे ही चकित करने वाली हैं किंतु जब आदिवासियों से स्वयं के संबंध में जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा करें तो कई चौंकाने वाले तथ्य हाथ लगते हैं।

आज भले ही आदिवासियों में शहरी प्रभाव और नाना प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के चलते अन्यों के साथ मिलने-जुलने तथा शिक्षा के विविध आयामों के कारण उनमें परिवर्तन की स्पर्धा मिलती हो किंतु गहराई से खोजबीन करने पर उनका असल मन आज भी अपने जीवनानुभव के प्रभावी सरोकारों से ही प्रतिबद्ध लगता है। बहुत सारे सरोकार तो उनमें उनकी दृष्टि से ठीक ही लगते हैं किंतु उन सरोकारों को ठीक से समझने के अभाव में हमने उनको गलत समझ लिया और अपनी मनमर्जी का अर्थ उन पर थोप दिया। उदाहरण के लिए उनमें प्रचलित सागड़ी प्रथा को ही लिया जा सकता है।

सागड़ी प्रथा की परंपरा हर काल और हर युग में रही है। इसका अर्थ दास अथवा दलित याकि पतित जन से है किंतु जिसके पास जीवनयापन का कोई साधन ही नहीं है वह जीवित रहने के लिए यदि किसी समर्थ व्यक्ति के वहां अपनी सेवा देता है, काम करता है तो लोगों की दृष्टि में वह शोषित तो है ही किंतु उसके पास जब किसी प्रकार का जीवनयापन का आधार नहीं है तो वह अन्यत्र काम करके भी संतुष्ट रहेगा किंतु यदि वह जिसके पास रह रहा है, वह यदि सद्भावी या स्नेही व्यवहार का नहीं होगा तो उसके साथ दमनकारी हैसियत भी दिखायेगा ही।

ऐसी प्रथा भारत के विभिन्न प्रांतों में, विभिन्न नामों से रही है। उदाहरण के लिए आन्ध्र में वैत्ती नाम से, उड़ीसा में गोथी नाम से, मैसूर में जीथा नाम से और मध्यप्रदेश में नौकरीनामा से इसका प्रभाव रहा है। उदयपुर क्षेत्र का डूंगरपुर तो इसका केन्द्र ही बन गया था। इधर यह प्रथा सागड़ी से अधिक हागड़ी नाम से जानी गई।

ऐसी ही आदिवासियों में प्रचलित मौताणा नामक प्रथा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि आदिवासियों के जीवन का अधिकांश परिवेश अलिखित है। परंपरानिष्ठ है। आस्थामूलक है और एक-दूसरे का विश्वासी है इसलिए उनमें जो चीजें, जीवन-व्यवहार से जुड़े जो सरोकार और धर्मनिष्ठ अनुशासन को अभिव्यक्त करते जो सामाजिक संदर्भों के सोपान हैं वे किसी लिखित कानून से नहीं चलते हैं। इसीलिए ऐसे समाजों ने अपने-अपने ढंग से जीवनयापन के तौरतरीके और उनमें निहित समस्याओं के हल निकाले हैं। समाज-विज्ञानियों की दृष्टि में ऐसे जितने भी प्राचीन समुदाय हैं वे अपनी परंपराओं से चलते रहते हैं। वहां व्यक्ति का प्राधान्य नहीं होकर समूह का प्राधान्य याकि सामूहिकता का आधार प्रमुखता लिए होता है।

मौताणा आधुनिक हिसाब से क्राईम है। आदिवासियों ने जिसे सिविल माना, हमने उसे क्राईम मान लिया। सिविल रूप में वह समस्या है, क्राईम नहीं। जो हानि हुई है, क्षतिपूर्ति द्वारा वह संभव है। कानून की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। मौताणा में समझौता है। जिस किसी गलती की क्षतिपूर्ति संभव हो उस समाज को पिछड़ा कैसे कहेंगे? वह तो अधिक विकसित समाज है।

भारत में निवास कर रहे आदिवासी सब ओर बसे हुए हैं। सबकी जातिगत पहचान जुदा-जुदा है। सबके रहन-सहन के तौरतरीके भी अलग-अलग हैं। अपने समाज, संस्कार, कबीले तथा धर्म-कर्म में भी वे अपनी-अपनी विशिष्ट पहचान देते पाये जाते हैं। प्रकृति के सहारे जीवनयापन करने के कारण प्रकृति की शक्ति और उसी के संबंल में उनका दृढ़ विश्वास प्रबल बना हुआ है। वे आज भी प्राकृतिक संसाधनों के भरोसे अपना भरोसा बनाये हुए हैं।

उनकी जीवनचर्या में आदिमपन की गंध, उसके लक्षण, उसके विश्वास, उसकी प्रकृति तथा देह-मन से जुड़े क्रियाकलाप दिखाई देते हैं। उसी के ठेठपन में उनके ठाठ, उत्सव, आनंद, मनोविनोद तथा निराशा, अवसाद, विसंगति एवं मौन एकाकी भाव सन्निहित हुए मिलते हैं।

राजस्थान के आदिवासी कम अजूबे नहीं नहीं है। उनमें राजस्थान की शक्ति, भक्ति तथा हल्दी, चंदन की सुवास उन्हें कई दृष्टियों से अन्य आदिवासी समुदाय से विलग करती है। राजस्थान का मेवाड़ अंचल इन आदिवासियों का घना बसेरा लिए है। यहां आदिवासी भीलों का निवास है जिन्होंने महाराणा प्रताप के साथ अपना युद्ध-कौशल दिखाकर हल्दीघाटी रणक्षेत्र में मुगल सैनिकों को चकमा दिया था। भीलों के साथ मीणों ने भी अपना जबरा पराक्रम दिखाया था।

मेवाड़ से लगे वागड़ अंचल में कथौड़ी वनजीवी निवास करते हैं जिनका आगमन महाराष्ट्र से हुआ। कोटा की ओर का क्षेत्र हाड़ौती अंचल के नाम से जाना जाता है। इस अंचल में सहरिया आदिवासी निवास करते हैं।

वे अपनी स्वांग कला तथा चित्रांकन परंपरा में अन्यों से कहीं अधिक श्रेष्ठता लिए हैं। आबू के पास का क्षेत्र गरासिया जनजाति का प्राचीन इतिहास लिए वैभवपूर्ण दरसाव का बहादुरी भरा दस्तावेजीकरण ही प्रस्तुत करता है। उनका रंगीन परिधान तथा नाचगान की जीवनदायिनी परंपरा उन्हें मनबहलाव की कई संस्कृतियों की सन्निधि का आत्मसुख देती है।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 अप्रेल 2017

सम्पादकीय

प्रदेश तो उत्तर प्रदेश.....

'गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़ैया' कहावत की तर्ज पर अब एक और कहावत हाथ लग गई है- 'प्रदेश तो उत्तर प्रदेश और सब प्रदेशिया।' सचमुच में मोदी सरकार ने इस अब चरितार्थ कर दिखाया है। सरकार के हाथ लम्बे होते हैं। कंठासीन किसी बात को जन-जन तक व्यापी करना संभव नहीं लगता पर सरकार कितना असरकार होती है, यह अच्छी तरह समझा जा सकता है।

उत्तर प्रदेश राजनीतिक दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है जिसने देश का ह्रदय ही अपने को सिद्ध कर रखा है। साहित्य की दृष्टि से भी देखें तो खड़ी बोली का यहीं बीजारोपण हुआ। 'निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल' कहने वाले बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने आंचलिक बोलियों का महत्व भी प्रतिपादित कर दिया। साहित्य का, शिक्षा का केन्द्र भी यही प्रदेश रहा। यहीं साहित्य-महारथी जयशंकर 'प्रसाद', सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', रामचन्द्र शुक्ल, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', अमृतलाल नागर, सुमित्रा नंदन पंत और कई हुए। नदियों में सर्व फलदायिनी गंगा भी इसी प्रदेश में प्रभावी बनी हुई है। भगवान राम और कृष्ण भी इसी धनभाग भूमि की देन हैं। सत्यवादी हरिश्चन्द्र का सत्य विचार भी यहीं उद्‌भवित हुआ। कबीर जैसे संतों का कमाल यहीं खिला।

याद करने बैठो या प्राचीन विद्या के सूत्र खोजने लगे तो ऐसे अनेकों सोपान हाथ लग सकते हैं। सब प्रशंसाजनित कल्याणदेही हैं पर कोई नकारा यदि अपने रंग-ढंग के नकारात्मक पक्ष भी ढूंढ़े तो आजादी के बाद के राजनैतिक परिवेश से निपजे वे पक्ष भी कई निकल आयेंगे। जनता जनार्दन ने भी उन तत्वों से घबराकर निजात पाना चाहा इसीलिए हाल के चुनावी परिणामों में भी अपनी छाप छोड़ी।

सबका अपना-अपना योग होता है। जब अच्छाई आती है तो अपने साथ सर्वप्रकारेण अच्छाई लाने का शगुन देती है। उत्तरप्रदेश में योगीजी अचानक उभरे जैसे हमारे देखते-देखते मोदीजी उभरे। देश का रथ अब तक एक चला रहा था, अब एक और जुड़ा है। कहते हैं, सूरज का रथ सात घोड़ों द्वारा चलायमान है। अभी तो दो-दो अक्षरों के दो जुड़े हैं- मोदी और उसके बाद योगी। आगे की आगे देखते रहो।

कल्लाजी के गादीधारी अनिल भाई से अचरजी मिलन

अहमदाबाद के वलाद में काली कल्ला धाम के नाम से लोकदेवता कल्लाजी का स्थानक न केवल गुजरात में अपितु राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश तक के लोगों के लिए तीर्थ बना हुआ है। इसकी स्थापना कल्लाजी के अनन्य सेवक सरजुदासजी ने की थी। मैं तथा डॉ. सुधा गुप्ता वहां जाया करते थे। वहीं से हम लोगों ने मीरां की विशेष खोज-यात्रा प्रारंभ कर छह प्रांतों में भ्रमण किया था। चित्तौड़ में दीवाली पर भूतों का मेला और फिर बैकुण्ठ चवदस को दिव्य आत्माओं का मेला देखा था। 'निर्भय मीरां' नाम से मैंने यात्रा वृतांत के जीवन परिवेश पर सर्वथा अजूबा हाल लिखा था।

हम लोग सरजुदासजी को बापूजी कहते थे। वे बड़े पहुंचे हुए संत तथा कल्लाजी के अनन्य सेवक थे। वलाद के बाद उन्होंने सलूम्बर के पास आसपुर में काली कल्ला धाम की स्थापना की तब हम आसपुर जाने लगे। बापूजी के निधन के बाद मेरा दोनों स्थानों से सम्पर्क दूर हो गया। वलाद की गादी बापूजी के सुयोग्य पुत्र अनिल ने पकड़ी और कई रूपों में उसका आश्चर्यजनक विस्तार किया।

वर्षों बाद 23 मार्च को अचानक अनिल मुझसे मिलने आये तो मैं यकायक तो उन्हें पहचान ही नहीं सका पर जब उन्होंने मुझे बाथ में समेट लिया तो मुझे अपार खुशी हुई और पहचान भी लौट आई। वे बड़े खुशमिजाज, गंभीर और प्रतिष्ठा प्राप्त दायित्वबोध के स्वामी लगे। करीब आध-पौन घंटे तक हमारा आत्मीय उमाव नई-पुरानी स्मृतियों की सौरभ का गंधी बना। इस बीच उनकी खुशबू-भनक पा कुछ भक्त भी आते रहे और उनको नमन कर धन्य होते रहे। मुझे भी लगा, मैं अनिल भाई के माध्यम से बापूजी से भेंट कर कल्लाजी का कृपाकांक्षी बन रहा हूं।

कल्लाजी के सेवाभावी सेवक

हमारी बातचीत में कल्लाजी के विविध प्रभावी धामों का भी संदर्भ आया। मुझे याद आये, हमारे साथी राजेन्द्र वीरानी के घर भीमसिंहजी की 27 अप्रेल 2016 को लगी गादी के बोल- 'इष्टबल कभी नष्ट नहीं होगा।

घी के दीपक से देवता को ताकत मिलेगी। नारियल की तरह व्यक्ति भी स्थिर और मजबूत रहे। वह कभी किसी का मजबूर नहीं बने। मन को सदैव स्वस्थ बनाये रखें। मन यदि बीमार हो गया तो शरीर भी बीमार बना रहेगा।'

आशीर्वाद में कोई विवाद, वाद-विवाद नहीं। एक मोती के दोनों ओर, आरपार छेद की तरह स्त्री-पुरुष का जुड़ाव है। दोनों छेदों का धागा एक होता है। इस धागे की तरह ही स्त्री-पुरुष का अन्तर-जुड़ाव है। बांसवाड़ा, रूंडेड़ा, पुंजपुर, गोपीनाथ का गड़ा, पड़ोली, वरदा, ओबरी, मादड़ी, सागवाड़ा, देवथली, वाड़ा-गोवाड़ा, हसनपुर, धूलखेड़ा कल्लाजी के जागृत धाम हैं।

भीमसिंहजी की वरदा में शनिवार-रविवार को गादी लगती है। सन् 1982 में देवता कल्लाजी ने परचा दिया था तब से गादी संभाल रहे हैं। इनके दादाजी परवतसिंहजी ने 45 वर्ष तक सेवा की। सन् 1973 में उनका निधन हुआ तब उनकी उम्र 70 वर्ष की थी। उन्हें 24 किरणें प्राप्त थीं। स्वरूपसिंहजी रूंडेड़ा (रनेला) के थे। उनमें 23 किरणें थीं। जब वे भाव में आते, उनकी दोनों भुजाओं पर सांप दर्शन देते थे। एक नर सांप कल्लाजी और दूसरे नारी-सांप कृष्णाजी। सरजुदासजी को 21 किरणें प्राप्त थीं। वरदा में 17 किरणें और अन्य स्थानों पर सेवकों को 5 से लेकर 7 किरणें प्राप्त हैं। **-म.भा.**

जन्मदिन के आठ दशक

अब व्यक्ति में अपना जन्म दिवस मनाने की चाह बढ़ती जा रही है। पहले ऐसा कुछ नहीं था। व्यक्ति को अपना जन्म दिवस भी याद नहीं रहता था। पूछने पर किसी विशेष घटना के साथ अपना जन्म अथवा उम्र बताकर अन्दाजा लगाया जाता था। मेवाड़ में जैसे फलाणे महाराणा की गद्‌दीनसीनी अथवा देवलोकगमन के समय इतनी उम्र थी। इसी तरह अब विवाह की वर्षगांठ मनाने का प्रचलन भी बढ़ गया है।

16 मार्च को ऐसी ही एक जन्मगांठ पर आयोजित प्रीतिभोज में जाना हुआ। ऐसे आयोजन बोहरा गणेशजी के स्थान पर होते हैं। गणेशजी की कृपा से कभी भोज सामग्री में कमी नहीं देखी गई। ये गणेशजी विवाह के लिए जरूरतमंदों को आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते हैं और निर्विघ्न समारोह समाप्ति के लिए भी प्रसिद्धि लिए हैं।

रोशनजी कंठालिया को अपने उपलब्धिमूलक जीवन के आठ दशक पूरे हुए। कानोड़ गांव के एक सामान्य ओसवाल परिवार में जन्म लेकर अपने सेवाभावी संस्कारों से बड़ा नाम और उतनी ही लोकप्रियता अर्जित करने वाला यह एक ही नाम है जिसने नर्सिंग की ट्रेनिंग लेकर लगातार 40 वर्ष राजकीय सेवा में कार्य किया और डूंगरपुर के राजकीय चिकित्सालय से अधीक्षक पद से निवृत्ति ली। रोशनभाई की दो विशेषताएं प्रमुख रहीं। एक तो जो भी उनके पास आया, उसकी निस्वार्थ और निशुल्क सेवा की। दूसरा जो उनके पास नहीं आ पाया, उसके पास जाकर उसकी सेवा की। इससे उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई। पितृ भक्ति में श्रवणकुमार की तरह रोशनभाई प्रतिदिन अस्पताल जाने से पूर्व अपने पिताश्री के चरण-वंदन करना कभी नहीं भूले।

एक और विशेषता भी रही, अच्छे ख्यातिलब्ध चिकित्सकों के साथ रहकर वह योग्यता प्राप्त की जो अपवाद स्वरूप ही देखने को मिलती है। सेवानिवृत्ति के बाद भी स्वयं की क्लिनिक से जो सेवा-सुश्रुषा की जा रही है, वह बेमिसाल है। सस्ता से सस्ता इलाज और शर्तिया इलाज की रोशनी के चलते जिसने जो भी दिया, नहीं दिया मगर उसका इलाज हो गया, यही संतुष्टि रोगी लेकर जाता है और उससे भी अधिक संतोष रोशनभाई पाकर खुशमिजाज बने रहते हैं। बकौल रोशनभाई- मैंने प्रारंभ से ही सेवा का मार्ग चुना है सो उस पर अडिग हूं। मेवा की आश नहीं रखी पर सेवा-भाव ने मेवा-भाव का रोचक स्वाद दिया। यों सबसे बड़ा धन तो संतोष प्राप्ति का है। कहा भी है- 'जब आवे संतोष धन, सब धन धूल समान।

गणगौर

विश्व का सबसे छोटा सोने का शतरंज सेट

उदयपुर के अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का ने विश्व का सबसे छोटा शतरंज सेट बनाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड का रिकॉर्ड तोड़ा।

मात्र 23 केरेट सोने से निर्मित 14 गुना 14 मिलीमीटर आकार के शतरंज बोर्ड में सबसे कीमती राजा 5 मिलीमीटर का है। अन्यों में वजीर 4, हाथी, घोड़ा व ऊंट 3.5 मिलीमीटर के हैं जबकि सैनिक 2 मिलीमीटर के बने हैं। खिलाड़ी चाहे तो चिमटी की सहायता से मोहरों को उठाकर आसानी से खेल सकते हैं। इसका वजन मात्र 1.500 मिलीग्राम है।

योग सेवक दक नहीं रहे

योग विद्या के अध्येता सुन्दरलाल दक का 12 मार्च को निधन हो गया। सेंटपॉल स्कूल में अध्यापन के साथ वे प्राकृतिक चिकित्सा तथा योग के क्षेत्र में भी निरन्तर अपना योगदान करते रहे। सेवानिवृत्ति के बाद रोगियों को योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा के जरिये निशुल्क इलाज कर बड़ी अच्छी पैठ बनाई। सेवा भावना के फलस्वरूप उन्होंने योग सेवा समिति की स्थापना की और वरिष्ठ नागरिकों का उमंग नाम से संगठन स्थापित किया। एक सामान्य तथा साधारण परिवार में जन्म लेकर अपने पुरुषार्थ, संकल्प तथा समर्पित सेवा भाव के कारण उन्होंने जो लोकप्रियता अर्जित की उसके कारण वे लम्बे समय तक याद किये जायेंगे।

पत्रकार संजय गोठवाल का निधन

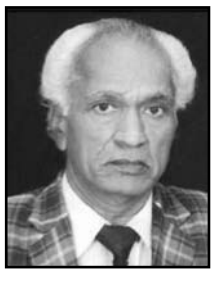

पत्रकारिता के क्षेत्र में लम्बे समय तक सक्रिय रहने वाले संजय गोठवाल का 15 मार्च को 73 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। अपने पुश्तैनी कपड़ा व्यवसाय के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

प्रारंभ में जलते दीप, वीर अर्जुन तथा जनसत्ता के संवाददाता के रूप में उन्होंने संवाद प्रेषण का कार्य किया। स्वभाव से वे बड़े सरल चित्त तथा मिलनसार थे। उनके सुसंस्कार दिनेश तथा सुनील नामक उनके पुत्रों में भी यथावत मिलते हैं जो जलते दीप तथा नफा नुकसान से बड़ी सक्रियता से जुड़े हुए हैं।

पोथीखाना

डॉ. भानावत लिखित तीन पुस्तकें

जिन्हें मैं जानता हूं

उदयपुर के जो लोग अपनी कलम के कारण पूरे देश में जाने जाते हैं उनमें डॉ. महेन्द्र भानावत भी एक हैं। डॉ. भानावत के लेखन को मुख्यत: दो धाराओं में बांट कर देखा जा सकता है। लोककला और लोकसाहित्य विषयक लेखन तथा सृजनात्मक लेखन। इनमें से कई पुस्तकें अपने क्षेत्र में न केवल पर्याप्त रूप से चर्चित हैं बल्कि अधिकारिक सामग्री के कारण संदर्भ ग्रंथों के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में डॉ. भानावत की पहली कृति कविता की 'कोई-कोई औरत' थी। कविताओं का कथ्य दैनिक जनजीवन होते हुए भी यह पुस्तक बांकपन के कारण याद रखने काबिल है।

डॉ. भानावत ने एकदिन बातचीत के दौरान बताया कि वे पत्र-पत्रिकाओं में संस्मरण, रिपोर्ताज और जीवनी-अंश पढ़ना सबसे अधिक पसंद करते हैं। उस समय उनके इस कथन का कोई विशेष अर्थ मैं नहीं निकाल सका परन्तु कुछ ही दिनों बाद जब उनके द्वारा लिखित संस्मरण प्रधान आलेखों की पुस्तक 'जिन्हें मैं जानता हूं' प्रकाशित हुई तो वह कथन सहसा अर्थवान हो उठा।

इस संग्रह में लेखक ने बीस लोगों को शामिल किया है। विविधता की दृष्टि से देखा जाय तो आलेख-लेखक ने जीवन के विविध क्षेत्रों तथा साहित्य, राजनीति, कला, संगीत, शिक्षा आदि में ख्यातनाम लोगों को इस कृति में स्थान दिया है वहीं दूसरी ओर शिकार जगत और डाक जगत को भी नहीं भूला है जिसके बारे में पाठकों में जिज्ञासा की कमी नहीं है किंतु लिखने वालों की कमी अवश्य है जैसा डॉ. भानावत ने इस कृति की भूमिका में स्पष्ट किया है कि ये सभी आलेख संस्मरण विधा में नहीं हैं। बातचीत, आत्मकथ्य, व्यक्तित्व विश्लेषण और कहीं-कहीं विवरण विधाओं के सहारे लेखक ने एक संश्लिष्ट प्रभाव पैदा करने की कोशिश की है। हिंदी में संस्मरण साहित्य की कमी है।

कदाचित इसका एक कारण यह हो सकता है कि हिन्दी का साहित्यकार अन्तर्मुखी किस्म का प्राणी होता है और उसके व्यक्तित्व की बहुत सी बातें जीवन पर्यन्त प्रकट नहीं हो पाती हैं। हां, मृत्यु के उपरान्त भले ही ये बातें अटकल पच्चू शैली में सामने आती हों। जो संस्मरण साहित्य उपलब्ध है उसमें भी कृतित्व पक्ष ही उजागर अधिक हुआ है जबकि अच्छे संस्मरण की पहली शर्त ही संबंधित व्यक्ति के व्यक्तित्व पक्ष को उजागर करना होता है।

डॉ. भानावत की यह कृति इसीलिए अभिनंदनीय है क्योंकि उन्होंने इस दिशा में एक ईमानदार कोशिश की है। इस कृति के आलेख संबंधित व्यक्ति के व्यक्तित्व की परतों को एक आत्मीय स्पर्श के साथ उद्घाटित करते हुए पाठक तक उस व्यक्ति का ऐसा बिम्ब पहुंचाते हैं जो उसके जाने-पहचाने बिम्ब से भिन्न न होते हुए भी एकदम नया और आल्हादित करने वाला होता है। यह कृति लेखकीय चयन दृष्टि और अनौपचारिक प्रस्तुति के कारण आदर के साथ याद की जायेगी तथा संस्मरण साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सकेगी।

अजूबा राजस्थान

डॉ. भानावत की ख्याति एक लोककला मर्मज्ञ एवं लोककला विश्लेषण के रूप में है। 'अजूबा राजस्थान' में डॉ. भानावत का रूप अपनी उत्कृष्टता के साथ प्रकट हुआ है।

पुस्तक में 27 आलेख हैं जिनकी विषयवस्तु पाठक के सामने राजस्थान के विविधतापूर्ण जनजीवन की झांकी प्रस्तुत करती है। आलेखों में राजस्थान के लोकविश्वास, वेशभूषा, आभूषण, रीति-रिवाज, पशु-पक्षी, वनस्पति, रहस्य रोमांच, लोकपर्व, देवी-देवता आदि के संबंध में उपयोगी सामग्री का सुरुचिपूर्ण प्रस्तुतिकरण किया गया है।

वस्तुत: लोकजीवन अपनेआप में इतना वैविध्यपूर्व तथा बहुआयामीय होता है कि इसके संबंध में किसी भी निष्कर्ष अथवा विवरण को अंतिम नहीं कहा जा सकता। यह उस भूमिगत जल-स्रोत की तरह है जो प्रकृत: अदृश्य होते हुए भी अगाध है। ज्यों-ज्यों आप उसका शोधन खनन करेंगे त्यों-त्यों उसका नित्य नवीन अमृतमय स्वरूप प्रकटेगा जो अब तक शायद अप्रकट था।

डॉ. भानावत को इन आलेखों के संबंध में इसीलिए बधाई दी जा सकती है क्योंकि उन्होंने समूचे राजस्थान में जहां-जहां भी, उन्हें अजूबापन दिखाई दिया जिस परिवेश में उन्हें संभावनाएं दिखाई दीं। जिस सांस्कृतिक घटना में उन्हें जीवन्तता की धड़कन सुनाई दी, अपने आलेख की विषयवस्तु बनाया और अपने लम्बे अनुभव तथा अध्ययन के आधार पर प्रतिपाद्य विषय को पर्याप्त गंभीरता के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का यत्न किया। अजूबा राजस्थान को संक्षेप में लोक समाज शास्त्र की एक उल्लेखनीय कृति कहा जा सकता है जो कई नये और अनछुए विषयों पर प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करती है।

-डॉ. भगवतीलाल व्यास

राजस्थान के मांडणें

प्रस्तुत पुस्तक कलेवर में लघु होते हुए भी मांडणों की रूपरेखा एवं कलात्मकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मांडणें वस्तुत: आलेख्य-कला के ही पूर्वज हैं। मानव स्वीभाव में सहज अंकुरित सौन्दर्य भावना ही मांडणों के मूल में सन्निहित है। मांडणों की प्रवृत्ति समग्र भारत में समान है, भले ही विभिन्न प्रदेशों में नामान्तर का विभेद हो। यही लोककला सधे हाथों से रूपायित होकर कला का रूप लेती है और किसी भी समाज के क्रमानुसार विकसित रूप को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। मांडणें मंगल-सूचक, आचार-विचार मूलक मानव मन की अभिव्यक्ति होते हैं, अत: विवाहादि अवसरों पर नव ग्रहों के प्रतीक रूप में बनने वाले हल्दी-आटे तथा रंगों आदि से निर्मित चक्रादि भी वस्तुत: मांडणों की रूपाकृति होते हैं। दीपावली होलिका तथा विजय दशमी आदि सांस्कृतिक पर्वो पर इनका रूप बड़ा हो जाता है।

महाराष्ट्र-आन्ध्र तथा बंगाल-असम में यह लोककला प्राचीन समय से ही विकसित रूप में रही है। इन कलाओं के संरक्षण में राजस्थान का योगदान भी महत्वपूर्ण है। गोबर, गेरू, दही तथा मिट्टी आदि सहज उपलब्ध सामग्री से ही मांडणों को रूपायित करना भारतीय महिलाओं की प्रत्युत्पन्नमति का सूचक है। लेखक ने इस पुस्तक के द्वारा न केवल लोककला को जीवित रखने का प्रयास किया है, अपितु कला-प्रेमियों पर भी उपकार किया है।

-दैनिक हिन्दुस्तान,11 जुलाई 1978

इस विषय पर यह प्रथम ग्रंथ है जिसे एक सच्चे लोकान्वेषक के रूप में खोजबीन कर डॉ. मेहन्द्र भानावत ने प्रस्तुत किया है। आंगन के ये मांडणें राजस्थानी नारी की सौन्दर्यप्रियता की पहचान देते हैं अत: उसने अपने गीतों में भी इन्हें स्थान दिया और उसका महत्व अंकित किया है। लोककला तथा लोकसंस्कृति में आस्था एवं रूचि रखने वाले प्रत्येक स्त्री-पुरूष के लिए मांडणों के विविध चित्रों से सुसज्जित यह पुस्तक पठनीय है।

- डॉ. अज्ञात

खोज-खबर

कानोड़ में कवि सम्मेलन

अपनी जन्मभूमि कानोड़ में 31 जनवरी 1976 को जवाहर जैन छात्रावास में सुन्दर मुर्डिया ने कवि सम्मेलन रखा। सुन्दरजी विभिन्न शैक्षणिक रुचियों वाले परिपक्व शिक्षक थे। उनके सुसंचालन में छात्रों की संख्या में लगातार वृद्धि होती रही। इस कारण दूर-दूर तक के छात्र वहां अध्ययनार्थ प्रवेश पाते। शैक्षणिक स्तर के साथ शैक्षणिक गतिविधियों में छात्रों की रुचि-सम्पन्नता का ध्यान रखा जाता। उस कवि सम्मेलन में भाग लेने मेरे साथ उदयपुर से ओंकारश्री, चन्द्र गंधर्व, राधामोहन पुरोहित, विलास जानवे, गोपाल वर्मा और देवकर्णसिंह राठौड़ थे। डूंगला से भगवतीप्रसाद व्यास आ गये थे। कवि सम्मेलन देर रात तक चला। छात्रों के अलावा गांव की जनता बड़ी संख्या में ठठाठठ श्रवणशील बनी। रात को मैं, ओंकारश्री, देवकर्णसिंह तथा चन्द्र गंधर्व वहीं ठहर गये।

दूसरे दिन पास ही पान की खेती, पनवाड़ी देखने चले गये। पानवाले गणेश तम्बोली मेरे परिचित थे। वे हमारे साथ उनकी पनवाड़ी में ले गये। हवादार पनवाड़ी में पान की तरतीबवार बेलें देख हम लोग चकित रह गये। सब ओर से हवादार ढकी बेलों की देवी की भांति सार संभाल की जा रही थी। गणेशजी ने एक-एक बेल के एक-एक पत्ते की कारगुजारी बताई। कहा भी कि बच्चे से भी अधिक देखभाल करनी पड़ती है। बड़ी सावधानी और श्रम देना पड़ता है। बिना जूते प्रवेश करना होता है। लम्बी-लम्बी कतारबद्ध पान की बेलें तो स्थिर रहती हैं। उन पर पत्ता लगता है वही पान है। पान हटाते रहते हैं। जहां कलम की जाती है वहां फिर पान उग आता है। तीन-चार वर्ष बाद पूरी पनवाड़ी बदलनी पड़ती है। आश्चर्यजनक सुना कि पान के कोई फल और फूल नहीं होता।

कानोड़ के पान बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। यहां के पान को नागरवेल के पान के रूप में दूर-सुदूर तक जाना जाता है। यहां 20 से अधिक पनवाड़ियां हैं। पनवाड़ी के बाहर परवलों की बेलें पनवाड़ी पर चढ़ी हुईं देखीं। अधिकांश लोग परवल को पान का ही फल समझते हैं पर गणेशजी ने इस भ्रांति को दूर कर दी। परवल में नर और मादा परवल होती है। नर परवल के कोई फल नहीं लगता बल्कि उसकी हवा से मादा परवल की बेल फलवती होकर परवल के रूप में फल देती है। पान की खेती में रोग अधिक लग जाता है। कत्था-चूना इसकी अच्छी दवा है।

यहां से हम लोग दर्शनीय स्थल महादेवजी गये। कारेश्वर महादेव के रूप में इस स्थान को बड़ा पवित्र समझा जाता है। यहां वैशाख पूर्णिमा को मेला भरता है। गोमती नदी के पवित्र प्रवाह में लोग नहाकर पाप-मुक्त होते हैं। यहां पास में बोहेड़ा-बानसी कस्बे हैं जहां से गोमती निकलती है। महादेवजी के यहां गोमती में नहाने से कोढ़ी ठीक हो जाता है। कहते हैं, मेवाड़ के महाराणा कुंभा को कोढ़ थी। यहां नदी में नहाने से उनकी कोढ़ दूर हुई। यहां कोढ्ये पेड़ भी हैं। इनके छेद में फूंक मारने से पानी की धार फूटने लगती थी पर अब यह चमत्कार किन्हीं कारणों से जाता रहा। यहां के पानी की यह भी विशेषता है कि तीन दिन के भीतर हड्डी गल जाती है। कुछ लोग इसी पानी में यहां अस्थि-विसर्जन भी करते हैं।

इसी नदी को आगे जाकर बांधा गया जो ढेबर झील के नाम से जानी गई। कहते हैं, इसकी पाल बार-बार बांधी गई पर पानी रुका नहीं तब महाराणा जयसिंह को रात को सपना दिया कि मैं तब ही बंध पाऊंगी जब पाल पर पानी के निकास का जरा सा रास्ता रखा जाय। महाराणा जयसिंह ने तब वहां एक विशाल पाल का निर्माण कराया और पानी का जरा सा रास्ता रखवाया जहां से बूंद-बूंद पानी का रिसाव आज भी होता है। ढेबर के बाद यह झील महाराणा जयसिंह के नाम से जयसमंद के रूप में ख्यात हुई। कहते हैं, इसमें नौ नदियां और निन्याणु नालों का पानी आता है। यह विशाल झील कभी सूखती नहीं है और चाहे कितना ही पानी आये, अपनी मर्यादा भी नहीं लांघती है।

यहां से हम पुन: कानोड़ आये। यहां बड़ले के पास देवरी बनी हुई है जिसमें लिंग रूप महादेव बिराजमान हैं। बाहर पगल्याजी तथा नंदिया स्थापित हैं। यहीं एक लम्बी लाट खड़ी है। कोई तीन सौ वर्ष पूर्व यहां किसी खाकी साधु ने तपस्या की थी। वह यहीं दफनाया गया। ऐसी तीन लाटें और हैं जो सारंगपुरा, आदीश्वरजी तथा भाणपा गांव में स्थापित हैं जो इस लाट से छोटी हैं।

मंदरी के पीछे हालवेरा नामक बावड़ी है। इसके पीछे कुम्हारों की बस्ती है। मंदरी के महादेवजी किसी को नहीं पले, फले। मंदरी के ठीक सामने बोहरवाड़ी गली है। कानोड़ के आसपास यों तो और भी तालाब हैं पर गांव में कमल वाला तालाब तथा जोइरा तालाब मुख्य हैं। कमल पुष्प के कारण कमल वाला नाम पड़ा। कमल के कारण इसकी सुन्दरता बनी रहती है। पानी भी साफ रहता है। जोइरा वाला का पानी गंदा होने से इसे गूल्या तालाब भी कहते हैं।

-म.भा.

डॉ. मालती को फणिश्वरनाथ रेणु पुरस्कार

प्रख्यात लोकवार्ताविद् डॉ. मालती शर्मा लिखित 'परम्परा का लोक' नामक पुस्तक पर महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी ने फणिश्वरनाथ रेणु पुरस्कार देने की घोषणा की है। डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा सम्पादित 352 पृष्ठ की यह पुस्तक आर्यावर्त्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली से 2016 में छपी थी। इसके लिए डॉ. भानावत ने प्रस्तावना में लिखा-''पुस्तक में मालतीजी द्वारा लिखित 44 आलेख किसी एक दिशा, एक दृष्टि, एक विषय, एक विन्यास, एक शिल्प, एक शैली, एक बोध, एक लोकाचार, एक विचार, एक मत, एक रंग, एक छवि, एक मन्तव्य के सूचक नहीं हैं और न किसी एक ही लेखन-सांचे से आबद्ध हैं। सब अपने में अलग विविध हैं। अजूबे हैं। कहीं से भी अपनी यात्रा शुरू कर समाप्त कर देने वाले हैं।' उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व 1991 में इसी अकादमी द्वारा मालतीजी की पुस्तक 'सो फिर भादों गरजी' पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है। शब्द रंजन की बधाई।

उदयपुर की गौरवी सिंघवी सम्मानित

उदयपुर। देश की उभरती हुई उदयपुर निवासी तैराक गौरवी सिंघवी

द्वारा हाल ही में मुंबई में सी-लिंक से गेटवे ऑफ इंडिया की दूरी को तैरकर पार करने का रिकॉर्ड बना राजस्थान को गौरवान्वित करने की उपलब्धि पर राजस्थान फोरम द्वारा जयपुर के होटल आईटीसी राजपुताना में सम्मान किया गया।

इस अवसर पर गौरवी ने कहा कि मेरी सफलता में मेरे परिवारजन, दोस्त और प्रशिक्षक बराबर के हकदार हैं। उनके समर्थन और त्याग से ही मैं यहां तक पहुंची हूं। मैं राजस्थान फोरम को उनके स्नेह के लिये आभार प्रकट करती हूं। इस कार्यक्रम से मुझे बेहद प्रोत्साहन मिला और मैं विश्वास दिलाती हूं की आगे भी बेहतर प्रदर्शन करती रहूंगी।

संस्कृतिकर्मी संदीप भूतोड़िया ने कहा कि राजस्थान दिवस से ठीक पहले गौरवी ने राजस्थानवासियों को एक अनुपम उपहार दिया है। राजस्थान फोरम की कार्यकारी सचिव अपरा कुच्छल ने कहा कि राजस्थान फोरम का उद्देश्य राज्य से जुड़ी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना रहा है। हम उसके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

समारोह में आरोहिणी, दिवास, फिक्की फ्लो, ग्रासरूट मीडिया फाउण्डेशन, हैल्प इन सफरिंग, जयपुर सिटीजन फोरम, पीपल्स मीडिया थियेटर, रघुसिन्हा माला माथुर ट्रस्ट, रंग मस्ताने श्रुति मंडल, वी केयर आदि संस्थाओं द्वारा भी गौरवी का सम्मान किया गया।

एमपीएच प्रोग्राम के लिए सार्क देशों से आवेदन आमंत्रित

उदयपुर। जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफपब्लिक हेल्थ (जेएचएसपीएच), आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी - जयपुर के साथ मिलकर भारत में मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ (एमपीएच) डिग्री प्रोग्राम उपलब्ध करा रहा है। मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ, दो वर्ष का पूर्णकालिक प्रोग्राम है, जिसमें कुल 30 सीट हैं। अक्टूबर 2017 से शुरू होने वाले 5 वें बैच के लिए आवेदन आमंत्रित हैं। पिछले चार बैचों के शानदार प्लेसमेंट के चलते, भारत, श्रीलंका, बंग्लादेश, अफ़ग़ानिस्तान और म्यांमार से एमपीएच प्रोग्राम में नामांकन हेतु भारी संख्या में अभ्यर्थी इच्छुक हैं।

आईआईएचएमआर के चेयरमैन, डॉ. एसडी गुप्ता ने बताया कि पिछली शताब्दी में सार्वजनिक स्वास्थ्य (पब्लिक हेल्थ) में भारी बदलाव आया है। जॉन-हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी - आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ (एमपीएच) दोनों ही संस्थाओं की मुख्यक्षमताओं को दर्शाता है। दक्षिण एशिया में सार्वजनिक स्वास्थ्य की चुनौतियों का सामना करने वाले छात्रों की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए तैयार, इस प्रोग्राम में स्वास्थ्य प्रबंधन शोध में जेएचएसपीएच की उत्कृष्टता और आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी की विशेषज्ञता का समावेश है। डॉ. गुप्ता ने बताया कि इस प्रोग्राम का शुल्क, अमेरिका में कोई भी अन्य एमपीएच प्रोग्राम के लिए किसी छात्र द्वारा दिये जाने वाले शुल्क का एक-तिहाई है। जेएचएसपीएच, आईआईएचएमआर एमपीएच प्रोग्राम के लिए कोर्स फीस 22000 अमेरिकी डॉलर है। इस प्रोग्राम में दाखिला पा चुके छात्रों को जॉन्स हॉपकिन्स ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ, बाल्टीमोर, यूएसए के इंटेंसिव इंस्टीट्युट में सार्वजनिक स्वास्थ्य में समस्या समाधान पर दो हफ्ते के कोर्स में शामिल होने जाने के लिए यात्रा एवं ठहरने हेतु अंतर्राष्ट्रीय छात्रवृत्ति दी जायेगी।

हिन्दुस्तान जिंक सम्मानित

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक की इकाई दरीबा स्मेल्टर कॉम्पलेक्स को जल संरक्षण के क्षेत्र में 'उत्कृष्ट अवार्ड' से सम्मानित किया गया है। दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में यह सम्मान जिंक़ की ओर से सह-महाप्रबन्धक-सिविल सीएसवी प्रसाद, प्रबन्धक-यूटिलिटि हेमन्द्र कुमार शर्मा, हेड-पर्यावरण अंकित मिश्रा एवं हेड-सस्टेनबल्टि लवेश आहुजा ने हरियाणा सरकार के माननीय उद्योग एवं वाणिज्य/पर्यावरण एण्ड औद्योगिक प्रशिक्षण मंत्री विपुल गोयल से ग्रहण किया। इस अवसर पर यूनेस्को नेचूरल साईन्स के सीनियर प्रोग्राम स्पेशलिस्ट मित्रसेन भीकाजी, दिल्ली हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधिश मुकुन्दकम शर्मा, ईजरायल एम्बेसी मिशन की उप-मुख्य श्रीमती डाना कुर्श उपस्थित थी। हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कोर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि यह पुरस्कार हिन्दुस्तान जिंक़ के दरीबा स्मेल्टर कॉम्पलेक्स द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रबन्धन एवं अधुनातन नवाचार के साथ-साथ स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावारण हेतु उठाये गये प्रभावी उपायों की मान्यता है।

लेजर ट्रीटमेंट सर्वश्रेष्ठ चिकित्सीय पद्धति

उदयपुर। रूखापन, धूप की जलन, नीरसता, काले घेरे, दाग-धब्बे, मुंहासे, या महीन झुर्रियाँ आदि त्वचा संबंधी अनेक समस्याओं से स्त्रियाँ कई दशकों से परेशान होती रही हैं। स्त्रियों ने घरलू नुस्खों से लेकर सौंदर्य उत्पादों तक क्या कुछ नहीं आजमाया, फिर भी उन्हें संतोषजनक नतीजे नहीं मिले।

कॉस्मेटिक सर्जरी इंस्टीट्यूट, बांद्रा एवं बीच कैंडी हॉस्पिटल्स के सीनियर कॉस्मेटिक सर्जन, डॉ. मोहन थॉमस ने कहा कि लेजर पील के नाम से प्रचलित लेजरलाइट उपचार आजकल त्वचा संबंधी लगभग सभी समस्याओं के उपचार की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सीय पद्धति है। त्वचा विशेषज्ञो-चिकित्सकों द्वारा व्यापक रूप से स्वीकृत इस पद्धति में प्रकाश की छोटी, संघनित किरणों का इस्तेमाल किया जाता है। ये किरणें त्वचा की गहराई में जाकर विभिन्न समस्याओं पर चोट करती हैं और सभी इसे आजमाने की सलाह देते हैं। इस प्रक्रिया में रौशनी की छोटी, केन्द्रित किरणों का इस्तेमाल किया जाता है। ये किरणें त्वचा की गहराई में जाकर त्वचा से संबंधित विभिन्न समस्याओं को न केवल सतही तौर पर बल्कि जड़ से समाप्त कर देती हैं।

वोडाफोन सुपरनेट 4जी राजस्थान के 100 से ज्यादा शहरों में पहुंचा

उदयपुर। भारत के प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाता वोडाफोन इण्डिया ने ऐलान किया है कि यह राज्य के 100 से ज़्यादा शहरों में 4 जी का सफलतापूर्वक लॉन्च कर चुका है। वोडाफोन अब अपने अत्याधुनिक आईपी नेटवर्क एवं विश्व-स्तरीय सेवाओं के साथ पूरे राजस्थान को कवर कर चुका है। वोडाफोन सुपरनेट 4 जी पहले से राज्य के प्रमुख शहरों जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, सीकर, कोटा, सवाई माधोपुर, अलवर, भीलवाड़ा, बाड़मेर, गंगानगर, बीकानेर और नागौर में मौजूद है तथा जल्द ही यह कई अन्य शहरों एवं नगरों में उपलब्ध होगा।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि वोडाफोन उपभोक्ताओं को उत्कृष्ट नेटवर्क का अनुभव प्रदान करने के लिए चरणबद्ध तरीके से बड़ी तेज़ी अपने 4जी फुटप्रिन्ट का विस्तार कर रहा है। राजस्थान में वोडाफोन सुपरनेट 4 जी सेवा नए एवं अत्याधुनिक नेटवर्क पर 3 जी सेवाओं के सपोर्ट के साथ सशक्त फाइबर बैकहॉल पर बनी है और उपभोक्ताओं को 4 जी पर शानदार कनेक्टिविटी एवं बेहतरीन डेटा फ्लो का अनुभव प्रदान करती है।

अमित बेदी ने कहा कि हमें गर्व है कि हम राजस्थान के 100 से ज़्यादा शहरों में 4जी सेवाओं का विस्तार कर चुके हैं। राजस्थान वोडाफोन इण्डिया के लिए महत्वपूर्ण बाज़ार है तथा प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाता के रूप में प्रदेश के तकरीबन 12 मिलियन उपभोक्ता हमारी इन अत्याधुनिक सेवाओं, प्लान्स और कनेक्टिविटी से लाभान्वित हो सकेंगे।

बिरला सीमेंट वर्क्स की गोल्डन जुबली मनाई

उदयपुर। एमपी बिरला समूह, चंदेरिया स्थित बिरला सीमेंट वर्क्स की गोल्डन जुबली मनाई गई। चंदेरिया यूनिट 10 सदस्यीय सीमेंट डिवीजन का दूसरा सदस्य है। इस मौके पर एम. पी. बिरला समूह और बिरला कॉर्पोरेशन लि. के चेयरमैन एच. वी. लोढ़ा व निदेशक मंडल के सभी सदस्य उपस्थित थे।

श्री लोढ़ा ने कहा कि बिरला सीमेंट वर्क्स, भारत में पहला ड्राई प्रोसेस प्लांट है जो कि नवीनतम तकनीक का उपयोग कर रहा है। समूह के चंदेरिया में दो सीमेंट प्लांट है जिनमें बिरला सीमेंट वर्क्स (1967) और चंदेरिया सीमेंट वर्क्स (1986) शामिल हैं। आज, इन प्लांट्स की कुल उत्पादन क्षमता 4 मिलियन टन वार्षिक है। निकट भविष्य में इसको बढ़ाकर 5.5 मिलियन टन वार्षिक किया जाएगा। चंदेरिया खदानों में बीते छह सालों से ब्लास्टिंग पर पाबंदियों के बावजूद प्लांट्स अपनी पूरी क्षमता के साथ उत्पादन कर रहे हैं। श्री लोढ़ा ने चंदेरिया टीम को प्लांट्स के सामान्य संचालन और बेहतर प्रदर्शन के लिए बधाई दी और 40 कर्मचारियों को लॉन्ग टर्म सर्विस अवॉर्ड देकर सम्मानित किया। निदेशक मंडल के सदस्य डी. एन. घोष ने कहा कि हम इस शानदार उपलब्धि पर अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर प्रचेता मजूमदार ने बताया कि चित्तौढ़गढ़ में एक मल्टी-स्पेशएलिटी अस्पताल स्थापित किया गया है और प्रियम्वदा बिरला अरविंद अस्पताल और साउथ प्वाइंट स्कूल, कोलकाता में भी गरीबों की मदद की जाती है।

किसी भी कंपनी की सफलता के लिए स्किल डवलपमेंट आवश्यक : त्यागराजन

उदयपुर। ब्लू स्कॉय लर्निंग के संस्थापक भास्कर त्यागराजन ने कहा कि आज के दौर में कॉर्पोरेट सेक्टर में सफलता के लिए स्किल डवलपमेंट, लीडरशिप, कम्यूनिकेशन स्किल होना आवश्यक है। ब्लू स्कॉय अपने गेम और मोबाइल ऐप के माध्यम से देश की प्रमुख कंपनयिों में कर्मचारियों को प्रशिक्षण देता है और उन्हें बताता है कि कंपनी के वेल्यूस क्या है और कैसे काम करना है। कंपनी को आपसे क्या उम्मीद है। इसके लिए ब्लू स्कॉय पिछले 15 सालों से काम कर रही है और अलग अलग सॉफ्टवेयर के माध्यम से कंपनी के उच्च प्रबंधन से लेकर नीचे के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देकर तैयार कर रही है।

त्यागराजन ने कहा कि हर उम्र में सोचने और समझने की शक्ति अलग हो जाती है। सीखने और सीखाने के तरीके हर समय तेजी से बदल रहे हैं। बच्चे की उम्र में तो सुनने की क्षमता भी होती है लेकिन बड़े होने के बाद हर किसी को बोलकर या भाषण देकर समझाना कठिन कार्य है। इसलिए गेम्स के माध्यम से व्यक्ति को सीखाना आसान काम है। उन्होंने कहा कि वे माइक्रोवेव लर्निंग भी देते हैं। इसमें व्यक्ति के अन्दर के विचारों को जगाना होता है और यही स्किल डवलपमेंट, लीडरशिप, कम्यूनिकेशन स्किल डवलप करने की स्टाईल है। इसमें आर्टिस्ट, फाईनेन्स, सेल्स और इनोवेशन सभी में तैयारी करवाई जाती है। इसके बाद सभी की क्रियेटिविटी को मिलाकर एक गैलेरी बनाते हैं और उसे प्रदर्शित किया जाता है। उन्होंने कहा कि वर्कर्स को अपने वर्किंग आवर्स में से 2-2 घंटे निकलवा कर दो सप्ताह तक लगातार लर्निंग बाईट दी जाती है। इसके बाद मोबाइल एप के माध्यम से उन्हें सिखाया जाता है।

उन्होंने कहा कि आप चाहे काम में कितने दक्ष हैं, आप बहुत अच्छे लीडर हैं लेकिन दूसरों के साथ काम करने में परेशानी महसूस करते हैं या उनसे ठीक से काम नहीं ले सकते हैं तो यह आपके लीडरशिप की विफलता है। ब्लू स्कॉय लर्निंग इसी विफलता को दूर करने के लिए ऐसे प्रोग्राम करती है। कम्पनी की स्थापना 2001 में हुई थी। इन 15 सालों में कम्पनी ने देश ही नहीं विदेशों में भी इस तरह के कई सफल आयोजन किये हैं।

'थिंक विथ मी' नेलसन के बेस्ट सेलर चार्ट में शीर्ष पर

उदयपुर। सहारा इंडिया परिवार के मैनेजिंग वर्कर व चेयरमैन सुब्रत रॉय सहारा द्वारा लिखित किताब 'थिंक विथ मी' नेलसन के बेस्ट सेलर चार्ट के शिखर पर है। 'थिंक विथ मी' में सुब्रतरॉय सहारा ने विस्तृत ढंग से समकालीन विषयों पर गहराई में जाकर और गहन सोच-विचार वाली विवेचना की है व उनका सामना कर भारत को एक आदर्श राष्ट्र तथा और भी अधिक महान देश बनाने की व्याख्या की है।

नेलसन बेस्ट सेलर लिस्ट के अनुसार 'थिंक विथ मी' ने विगत सप्ताह नेलसन बुक स्कैन में चोटी का स्थान हासिल किया है। इससे पूर्व यह पुस्तक इस चार्ट पर दसवें स्थान पर थी। पुस्तक को रूपा द्वारा प्रकाशित किया गया है। नेलसन बुक स्कैन सर्विस, जो कि विश्व की सबसे बड़ी बुक सेल ट्रैकिंग सेवा है, भारत, यू.के., आयरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, यूएस, साउथ अफ्रीका, न्यूजीलैंड, इटली, ब्राजील व स्पेन आदि में कार्यरत है व वहां से सीधे बिक्री के स्थान से सूचनाएं एकत्रित कर प्रेषित करती है।

ऑनलाइन व ऑफलाइन, दोनों प्रकार से यह डाटा एकत्र कर बुकअड्डा, क्रॉस वर्ड्स, कनेक्शन, डीसी बुक्स, फ्लिपकार्ट, इंडियाटाइम्स, इन्फीबीम, लैंडमार्क, लैंडमार्कटेल, कैपिटल बुक डिपो, रेडिफ, ओडिसी, पेजटर्नर्स, टीवी18 होमशॉपिंग, डब्ल्यू एच स्मिथ इंडिया, ईबे, महिंद्रा रिटेल, रिलायंस टाइमआउट तथा स्नैपडील आदि से किया जाता है।

जीवन, मृत्यु और अहिंसा

जहां केवल शरीर है, केवल आत्मा है वहां जीवन नहीं होता। शरीर और आत्मा जहां मिले हुए हैं वहां जीवन है। शरीर और आत्मा का वियोग मृत्यु है। शरीर को धारण नहीं करना मोक्ष है। आदमी में अनुकम्पा की चेतना का विकास होना आवश्यक है। अहिंसा उसी में प्रतिष्ठित हो सकती है जिसमें अनुकम्पा की चेतना का विकास हो। हिंसा वहां होती है जहां अज्ञान, अभाव और आवेश हो। अहिंसक बनने के लिए सात सूत्र- अभय, सहिष्णुता, मैत्री, अनुकम्पा, अहत्या, नैतिकता और नशामुक्ति आवश्यक है।

- आचार्य महाश्रमण

शाकाहार में राजस्थान प्रथम

यह सही है कि अहिंसा प्रधान भारत में 70 फीसदी लोग मांसाहारी हैं किन्तु शाकाहार में राजस्थान नम्बर वन पर है। गांधीजी ने ठीक ही कहा था कि किसी भी राष्ट्र की महानता का मापदण्ड पशुओं के प्रति उसका मृदुल और ममता का व्यवहार है इसीलिए मैं मरना पसंद करूंगा किन्तु मांस कभी नहीं खाऊंगा। हे राष्ट्रपिता! आपने तो ठीक ही कहा था मगर यहां तो सब कुछ अ-ठीक होता दिखाई दे रहा है। यह कैसी विडम्बना है कि हिंसक पशु शेर की शिकार पर तो दण्ड दिया जाता है मगर दूध-दही-घी देने वाले गाय-भैंस का कत्ल करने के लिए लाइसेंस दिया जाता है।

-निहाल अजमेरा

कठपुतलियों का विश्व.....

(पृष्ठ दो का शेष)

कहने लगते कि ये 16 इंच की पुतलियां बाहर प्रदर्शन के समय पूरी साढ़े पांच फीट की आदमकद दिखाई देती हैं। इनकी स्थिर आंखें चलायमान नजर आती हैं तथा मूक चेहरे गाते हुए प्रतीत होते हैं। इनकी अंग भंगिमाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि ये अनेक धागों से चलायमान होती हैं परन्तु वास्तव में इनके धागे दो या चार से अधिक नहीं हैं। रंगमंच पर रंगा हुआ पृष्ठभूमि में लगा काला परदा तथा सामने की रंगबिरंगी बिरादरी मुगल सम्राट के राजदरबार की समृद्धि को साक्षात कराती थी और ऐसा लगता था कि कम से कम 10 आदमी इन पुतलियों को संचालित करते हैं जबकि वास्तव में दो ही व्यक्ति जादू की तरह दर्शकों के मन को मोह लेते थे। इस तरह बुखारेस्ट में हमारे दो ही प्रदर्शन जनता पर अमिट छाप छोड़ने में सफल हुए।

देवीलाल सामर के नेतृत्व में दो ही कलाकार दयाराम तथा तोलाराम इस समारोह में बत्तीस पुतलियों की छोटी सी पिटारी के साथ सम्मिलित हुए और कठपुतली के परंपराशील खेल अमरसिंह राठौड़ की आधार भूमि लिए मुगल दरबार नामक खेल प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुति इतनी लाजवाब रही कि इसके आगे अन्य सारे ही कठपुतली प्रदर्शन निस्तेज हो गए और मुगल दरबार को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए सर्वोच्च पुरस्कार से अभिमंडित किया गया।

यह क्षण न केवल भारत के लिए अपितु पूरे विश्व में कठपुतलियों की भारतीय देन के लिए अलौकिक सिद्ध हुआ जब राजस्थान की धागा पुतलियां विश्व के सर्वोच्च कीर्तिमान के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। तोलाराम आज भी उस घटना को याद करता अभिभूत होता है और अफसोस करता है कि अब न सामरजी रहे, न दयाराम। केवल वह अकेला है जैसे किसी अंधेरी कोटड़ी में एकांतवास करते सिसकियां ले रहा है।

तोलाराम ने कलामंडल में रहकर देश का कोई अंचल नहीं छोड़ा जहां लोकधर्मी नृत्यों एवं कठपुतलियों के प्रदर्शन न दिये हों। रूमानिया तथा अन्य देशों में 2 माह 15 दिन की यात्रा कर 35 प्रदर्शन दिये। ट्यूनिशिया, कुवैत तथा अरब देशों की एक माह 11 दिन की यात्रा में 21, ईरान एवं इराक की 14 दिवसीय यात्रा में 26, डेनमार्क की एक माह 13 दिन की यात्रा में 39, स्पेन तथा अफ्रीका की एक माह 7 दिन की यात्रा में 36, स्वीडन, बेल्जियम तथा हॉलैंड की एक माह 2 दिन की यात्रा में 42, वियतनाम, इन्डोनेशिया, मलेशिया की एक माह 28 दिन की यात्रा में 8, फ्रांस तथा पेरिस की एक माह 12 दिन की यात्रा में 27, पेरिस की 26 दिन की यात्रा में 8, आस्ट्रेलिया की 12 दिन की यात्रा में 4, कुवैत की 8 दिन की यात्रा में 4 एवं इंग्लैण्ड की 10 दिन की यात्रा में 4 प्रदर्शन दिये।

इसके अतिरिक्त सिक्कीम के गंगटोक में 3, भूटान के थीम्पु तथा पारो में 6, नेपाल के काठमाण्डू, पोखरा, पालपा, तानसेन, बुटवाल, भेरवा तथा नेपालगंज में 21 प्रदर्शन देकर न केवल अपनी कला-संस्कृति बल्कि उधर की कला-संस्कृति एवं कलाकारों से हेलमेल कर अपना जीवन धन्य किया। ये यादें ही अब तोलाराम की विरासत बनकर उसे जिन्दादिल बनाये हुए हैं। यह सही है कि तोलाराम ने कभी किसी स्कूल की घंटी तक नहीं सुनी किंतु अपनी रूचि से अक्षर ज्ञान सीख गया और जैसा भी समय आया अपना काम चला लिया।

राजस्थान में कितने ही कलाकार ऐसे हुए जिन्होंने अपने कौशल द्वारा दूर-सुदूर तक बड़ा नाम कमाया किंतु वे गुमनाम अंधेरों में ही खो गए। इनमें भवाई नृत्य के बेजोड़ कलाकार दयाराम, चिड़ावी ख्यालों के सम्राट दूलिया राणा, बहुविज्ञ स्वांगों के धारक परसराम बहुरूपिया, रासधारी ख्यालों के सरताज गंगाराम वैरागी, तुर्रा ख्यालों के उस्ताद चैनराम, कलंगी के खाजू बेग, गिरधारीलाल जीणगर तथा अनगढ़ अखाड़े के लादूराम स्मृति शेष होकर हमारे देखते-देखते विस्मृत हो गए हैं और वर्तमान में कावड़ निर्माता मांगीलाल मिस्त्री, शहनाई वादक हरिराम नगारची और कलंगी ख्यालों के उस्ताद अकबर बेग जैसे नाम अपनी पहचान की चमक खोते जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को अणुव्रत पुरस्कार

उदयपुर। पटना में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के सानिध्य में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को वर्ष 2016 का अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार के तहत राज्यपाल रामनाथ कोविंद की उपस्थिति में महासमिति अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन ने स्मृति चिन्ह, प्रशस्तिपत्र और एक लाख इक्यावन हजार रूपये का चैक प्रदान किया। तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा बिहार के किसी मुख्यमंत्री को दिया जाने वाले यह प्रथम पुरस्कार था। आचार्यश्री ने मुख्यमंत्री को दिए गए पुरस्कार को नैतिकता को पुष्ट करने वाला पुरस्कार बताया और कहा कि बिहार राज्य में शराबबंदी कर जो सराहनीय कार्य किया उससे अन्य राज्य भी प्रेरणा लेंगे।

नीतीश कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं आचार्यश्री का पाटलीपुत्र की इस ऐतिहासिक धरती पर स्वागत करता हूं। शराबबंदी का निर्णय आसान नहीं था, लेकिन नौ जुलाई 2015 को तेरापंथ धर्मसुंघ की महिलाओं के एक कार्यक्रम से मुझे प्रेरणा मिली और बिहार में शराबबंदी लागू हो गई। मुख्यमंत्री ने यह पुरस्कार बिहारवासियों को समर्पित किया और कहा कि यह शराबबंदी में शामिल सभी लोगों के लिए है। राज्यपाल रामनाथ कोविंद ने कहा कि शराबबंदी के निर्णय पर मैं अपनी सहमति देकर खुद को गौरवान्वित महसूर कर रहा हूं। उन्होंने लोगों में सत्ता, पद, प्रतिष्ठा के नशे से मुक्त होने के लिए आचार्यश्री से लोगों को उत्प्रेरित करने की विनती की। इससे पूर्व आचार्यश्री के पटना में ऐतिहासिक आगमन पर उनका नागरिक अभिनंदन किया गया। तेरापंथ के विभिन्न संगठनों द्वारा राज्यपाल और मुख्यमंत्री को स्मृति चिन्ह और अंगवस्त्रम प्रदान किया गया। अहिंसा यात्रा के प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने अहिंसा यात्रा और आचार्यश्री के योगदान की जानकारी दी।

जोधपुर में पंजाबी कवियों के बीच काव्य-संध्या

केंद्रीय पंजाबी लेखक सभा के महासचिव एवं साहित्यकार सुशील दुसांझ ने राजस्थानी को वैज्ञानिक और समृद्ध भाषा बताते हुए केंद्र सरकार से अतिशीघ्र ही संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग की। उन्होंने कहा कि यह मांग अकेले मेरी ओर से ही नहीं अपितु केंद्रीय पंजाबी लेखक सभा से जुड़े 3500 लेखकों की ओर भी से की जा रही है।

ये विचार श्री दुसांझ ने कथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान की ओर से अंतर्राष्ट्रीय भाषा दिवस के अवसर पर पंजाबी कवियों के सम्मान में आयोजित साहित्य संगोष्ठी एवं सर्वभाषा काव्य संध्या में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि भूमंडलीकरण की बाजारवादी शक्तियां योजनाबद्ध रूप से हमारी लोक भाषाओँ ,संस्कृतियों और परम्पराओं को नष्ट कर रही हैं। विश्व की सात हज़ार भाषाओं में से हर रोज एक भाषा मर रही है। ऐसे में हमें अपनी अस्मिता को बचाये रखने के लिए प्रतिरोध की भूमिका में आने की जरूरत है। समारोह के अध्यक्ष आलोचक डॉ. रमाकांत शर्मा ने कहा कि पंजाब के कवियों के आगमन से महसूस हो रहा है जैसे सूर्य नगरी और स्वर्ण मंदिर का संगम हुआ है। इन कवियों की चेतना में माटी की गंध और जीवन के इंदरधनुषी रंगों की छटा उभर आई है।

साहित्यकार मीठेश निर्मोही ने कवियों का परिचय देते हुए उनकी काव्य-भूमि को रेखांकित किया। राजस्थानी के सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि इसका इतिहास एक हज़ार वर्ष पुराना है। पद्मश्री सीताराम लालस द्वारा बारह खण्डों में सम्पादित राजस्थानी- हिंदी शब्द कोश विश्व-भाषाओं में सबसे बड़ा कोश है जिसमें दो लाख से अधिक शब्द संग्रहीत किये गए हैं।

गोष्ठी में पंजाबी कवि जसविंदर, दर्शन सिंह, हरदम मान ने मानवीय सरोकारों से सराबोर कविताओं का पाठ किया। हबीब कैफी, पद्मजा शर्मा, चैनसिंह परिहार, श्यामसुन्दर भारती, आकाश मिड्ढा, फानी, बृजेश अम्बर, हितेंद्र गोयल, वाजिद हसन काजी, अमजद अहसास, रजा मोहम्मद, मनशाह नायक, अशफाक अहमद फोजदार, रमेश पंवार, दिनेश जीनगर आदि ने विविध भाषी काव्य पाठ कर काव्य संध्या को गरिमा प्रदान की।

-मीठेश निर्मोही

वेदान्ता शेयरधारकों को 6,580 करोड़ रुपये का अंतरिम लाभांश

उदयपुर। वेदान्ता के निदेशक मण्डल ने कंपनी के शेयरधारकों को वित्तीय वर्ष 2016-17 में 1770 प्रतिशत द्वितीय अंतरिम लाभांश देने की घोषणा की है जो एक रूपये के प्रति इक्विटी शेयर पर 17 रुपये 70 पैसे है। अंतरिम लाभांश की रिकॉर्ड तिथि 12 अप्रैल है। इसके अलावा, निदेशक मण्डल ने केयर्न इण्डिया के शेयरधारकों को 17 रुपये 70 पैसे प्रति इक्विटी शेयर लाभांश देने की मंजूरी दी है, जो वेदान्ता लिमिटेड और केयर्न इण्डिया लिमिटेड के बीच व्यवस्थित योजना के अनुसार कंपनी के शेयरधारक बनेंगे। योजना के प्रभावित होने के बाद केयर्न इण्डिया लिमिटेड के शेयरधारकों को लाभांश भुगतान की रिकॉर्ड तिथि निश्चित की जाएगा। केयर्न इण्डिया के शेयरधारकों सहित कुल 6,580 करोड़ रुपये का लाभांश दिया जाएगा।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

डॉ. गोस्वामी को मिला बेस्ट टीचर अवार्ड

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मिया गोस्वामी को ओरंगाबाद जालना में आयोजित समारोह में होम्योपैथिक चिकित्सा के क्षेत्र में बेस्ट शिक्षक के अवार्ड से नवाजा गया। यह पुरस्कार उन्हें महेन्द्र सिंह मेमोरियल ट्रस्ट, कलकत्ता, होम्योपैथिक डॉक्टर एसोसिएशन, महाराष्ट्र तथा होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से दिया गया।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

कान्यो मान्यो

ऐतिहासिक संगोष्ठी रो आयोजण

जणी गोष्ठी में म्हूं पोंच्यो वा कोई ऐंडीबेंडी संगोष्ठी नी ही। अन्तर्राष्ट्रीय लेवल री ही। वठे जाइने देख्यो तो कुल जमा दस नंग साहितकार हा। सगळा स्थानीय गोठीड़ा। एक भाइला ने पूछ्यो तो बतायो के आपां सब अन्तर्राष्ट्रीय हां। विदेशां मांय आपणा फुटनोट पोंचग्या। विदेशी आपांऊं मिलवा आवे। हाथ मिलावे। फोटूड़ो पाड़े। देशी चरण कमल वन्दे तो वो अंतर्राष्ट्रीय लेवल रो वे।

म्हारी काची समझ ही। भाइला रे सामे कान पकड्यो तो वो नानो-नानो वेतो नजर आयो। म्हारे दूजी आड़ी एक दूजो भाइलो बेठो हो। वन धीरेकूं कान में क्यो के संगोष्ठी रा अध्यक्ष जठा तांई नी आवेगा, गोष्ठी चालू नी वेगा। पूण घंटो छानामाना बैठा पछै काबलकूबल वेवा लागी जदी संयोजक माइक पकड्यो अर बोल्यो के माफी चावूं, आज री संगोष्ठी रा अध्यक्षजी अचाणचक मांदा वेइग्या। आपां सगळा प्रार्थना करां के वी फटाफट ठीक वेईजा।

छै कुरस्यां ही पण भरगी। खास मेमान, खासमखास मेमान, संरक्षक, परामर्शक सचिव बैठग्या। म्हूं होच में पड़ग्यो के ई सब संगोष्ठी रा सिरजणहार है के आयोजक संस्था रा तारणहार। कीने पूछां तो अबको लागे। संयोजक बोल्या के संगोष्ठी मांय पचास परचा आया है पण अतरो वदोतर टेम नी के सगळा भणे। वणामूं चुणिन्दा पांच जणा पांच-पांच मिनट मांय परचो भणे नीं, वींरो सार रूप समझायदे।

परचा भण्या रे वचे मंच माथे बिराज्योड़ा रा विचार सुणवा ज्यादा जरूरी हा पण वां ने टेम रे बंधण में बांधणा मुश्कल है सो विचार सुणता-सुणता टेम ज्यूं-ज्यूं चढ़तो र्‌यो, सुणवावाळा ऊंघता र्‌या। संयोजक घड़ी बंध्यो हाथ देखतो रेवे पण कोई वांरी बोली माथे नकेल नी नाक सक्यो। मंच माथे बिराज्या संस्था रा खासमखास हा। वी कई बोल्या, वी भी नी जाण सक्या पण वांरो मान राखणो हो। जदी संयोजक बोल्यो के वगत भोजन पाणी रो वेवा आइग्यो है जदी परचा भणणिया जी नी भणसक्या वांरा अर सगळा दूरा रा परचा भी भण्या समझ्या जाय अर सगळा भोजन माथे पधारो।

संगोष्ठी सूं वत्ता भोजन री पांत पर नजर आया। संगोष्ठी मांय जी परचा वाला नी हा वी वठे हाजिर हा अर खास-खास रे परिवार वाळा भी हाजिर हा। एक गोठी बोल्यो के ब्याव मांय एक नूतो हाव हंगरी नाम रो लागे ने एक पागड़ीबंध, एक पाई पामणा सुदी भी लागे। पागड़ीबंध नूता में पुरस, पाई पामणा में घर आया मेमान अर हाव हंगरी में परिवार रा सगळा गिण्या जावे।

आधा घंटा बाद संयोजक बोल्यो के दूजो सत्र वेवा रो है सो जीमण जीम वेगा पधारो। संगोष्ठी में आया ने भाड़ोभत्तो ने परचो भण्या रो मेनताणो लेणो है सो जाणो जरूरी है। अतराक में एक मसखरे तीर छोड्यो के दूजो सत्र भी होयग्यो समझ्यो जाय ज्यूं परचा भण्या समझ्या तो घणो चोखो काम वे। सगळा गेंटी हलाई ने होठां ने हंसी देतां राजीपणो दीधो। दूजे दन अखबारां मांय पूरी संगोष्ठी री खबर छपी। खबर में मुख्य एण्ट्रो हो जी अध्यक्ष नीं आया वी आया अर वां कई संदेश दीधो।

केन्द्रीय सरकार ने कृषि महाविद्यालयों को 40 प्रतिशत अधिक वित्त उपलब्ध कराया : राधामोहन सिंह

उदयपुर। कृषि व किसान कल्याण विभाग के केन्द्रीय मंत्री राधामोहन सिंह ने 'समृद्धि हेतु कृषि व स्थाई विकास' शीर्षक सेमीनार को संबोधित करते हुये कहा कि कृषि के क्षेत्र में छोटी जोतों का उत्पादन बढ़ाने, उत्पाद लागत घटाने के संबंध में निरंतर कार्य किये जा रहे है। उन्होंने बताया कि पिछले दो वर्षों में केन्द्रीय सरकार ने राज्यों में स्थित कृषि महाविद्यालयों के लिये 40 प्रतिशत अधिक वित्त उपलब्ध कराया है।

केन्द्रीय मंत्री ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने विगत दो वर्षों में 441 खाद्यान एवं बागवानी फसलों की उन्नत प्रजातियां विकसित की है। इसी तरह इन वर्षों में विभिन्न फसलों का 13478 टन प्रजनक बीज तैयार किया गया है। परिषद के संस्थानों ने 53 कृषि यंत्र विकसित किए हैं जिनसे किसानों को खेती में मदद मिलेगी। आईसीएआर ने 9 नए पशुधन और पोल्ट्री नस्लों को भी पंजीकृत किया है। साथ ही पशुओं में होने वाली बीमारियों से बचाव के लिए तीन नए टीके तथा बीमारियों का पता लगाने के लिए 17 डायग्नोस्टिक किट विकसित किया गया है।

कृषि मंत्री ने कहा कि वर्तमान में कृषि के समझ उपलब्ध चुनौतियों में छोटी जोतों को लाभप्रद बनाना तथा अधिकाधिक युवाओं को कृषि की तरफ आकर्षित करना है। उन्होने कहा कि यह चुनौती मुश्किल है लेकिन असंभव नहीं है। सेमीनार में डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, डॉ. ए. के. सिंह, उप-महानिदेशक कृषि विस्तार, डॉ. जे. कुमार, कुलपति, पंतनगर विश्वविद्यालय, डॉ. एन. सी. गौतम, कुलपति, चित्रकूट विश्वविद्यालय, डॉ. के एम एल पाठक, कुलपति, वेटेनरी विश्वविद्यालय, मथुरा, सुनील आंबेकर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, डॉ. रघुराज किशोर तिवारी, प्रो. आई जी के वी, रायपुर, गजेंद्र तोमर, संयोजक, तथा बड़ी संख्या में शिक्षक व छात्र- छात्राएं उपस्थित थे।

कलक्टर गुप्ता राज्य स्तर पर सम्मानित

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे के हाथों उदयपुर जिला कलक्टर रोहित गुप्ता को उदयपुर जिले में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से आमजन को बेहतरीन सुविधाएं प्रदान करने के लिए ई-गवर्नेंस अवार्ड 2016 से राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया। उन्होंने जिले में एक्शन उदयपुर, मोबाइल एप्लीकेशन, विद्युत विभाग एवं यूआईटी में कम्प्यूटराइजेशन के माध्यम से विभागीय कार्यों के गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन एवं निस्तारण को गति प्रदान की।

एक्शन उदयपुर एप के माध्यम से शहर के सौंदर्यीकरण के साथ ही आमजन की विविध समस्याओं का समयबद्ध निस्तारण किया। कम्प्यूटराइजेशन के माध्यम से ट्रांसफार्मर आवंटन एवं यूआईटी में आमजन के कार्यों को ऑनलाइन प्रक्रिया से निस्तारित करने महत्वपूर्ण पहल की।

न्यायाधीश हुए खान एवं भू विज्ञान विभाग की कार्यप्रणाली से रू-ब-रू

उदयपुर। राजस्थान स्टेट ज्यूडिशियल एकेडमी के 103 नवनियुक्त सिविल जजों को शैक्षिक तथा भ्रमण यात्रा के दौरान खान एवं भूविज्ञान विज्ञान निदेशालय के सभागार में पावर पॉइन्ट के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया।

नवनियुक्त जजों को विभाग के प्रशासनिक ढांचे, विभागीय कार्यप्रणाली, विभिन्न प्रकार के खनिजों, विभाग से संबंधित नियम, एमएमसीआर नियम- 1952 से संबंधित महत्वपूर्ण प्रावधानों एवं नवीन खनिज नीति के संबंध में पूरी जानकारी दी गई।

खान एवं भूविज्ञान के अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) जितेंद्र कुमार उपाध्याय ने बताया कि इस कार्यशाला में सभी नवनियुक्त जजों को अवैध खनन व उससे संबंधित नियम कानून की भी विस्तृत जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अतिरिक्त निदेशक (खान मुख्यालय) आर. के. नलवाया, अधीक्षण खनि अभियंता (सतर्कता) मधुसूदन पालीवाल, ज्यूडीशियल एकेडमी की अतिरिक्त निदेशक डॉ चेतना व ऐकेडमी के आसिफ अंसारी ने भी भाग लिया।

चेती नवरात्रा : मां दुर्गा का स्वरूप

एक विराट परिदर्शन में समाया है लोक

भारतमाता सोने की चिड़िया है। लोककवि इस तथ्य से परिचित रहा है इसीलिए मगही के कवि ने सोने के आभूषणों से सजी भारतमाता की तस्वीर अपने मन में टांकी थी- 'भारत माता हे, सोनवें पूजब तोहर पांव! तोहर देल सोना अभरनवा तोहरे देब चढ़ाएब।' लोककवियों के मन में भारतमाता की यही मूर्ति बसी हुई थी, लेकिन अंग्रेजों के शोषण ने उसे इतना चूसा कि वह माटी हो गई। छत्तीसगढ़ का ददरिया लोकगीत पुकार-पुकार कर कहता रहा- 'धूंकी साही अंगरेज भुइयां म छाइगे। मोर सोन के चिरैया माटी होई गे।' (अंग्रेज महामारी की तरह धरती पर छा गये और हमारी सोने की चिड़िया माटी हो गई।)

लोकसंस्कृति ऊपर की वस्तु नहीं है, वरन् भीतर की ऊर्जा है। वह ऊर्जा, जो एक तरफ जुड़ाव का काम करती है तो दूसरी तरफ ठोस बनाने का। असल में, लोकसंस्कृति का केन्द्र हृदय है जो अपनी भावना के चुम्बक से सबको खींचकर जोड़ने की कड़ियां रचता है। वहां विचार भी तटस्थ होकर भावना की स्थिति में पहुचता है और लोक द्वारा हृदयंगम होता है। चाहे लोकमूल्य हों या लोकविश्वास और चाहे लोकदर्शन हो या लोकधर्म, उनमें कहीं भी साम्प्रदायिकता, पक्षपात और भेदभाव की संकीर्णता नहीं है।

लोक का व्यक्तित्व विराट होता है। लोकदर्शन उसका मस्तिष्क है, तो लोकधर्म उसकी आत्मा। लोकमूल्य उसके नेत्र हैं और लोकविश्वास उसका हृदय। लोकाचरण और लोककर्म उसकी भुजाएं हैं तथा लोकगति और लोकवर्तन उसके चरण। ऐसे अगणित हाथ-पैर, हृदय और मस्तिष्क वाले शक्तिपुंज का नाम लोक है। ऐसे लोक की पहचान उसकी लोकसंस्कृति से होती है। इतिहास गवाह है कि बाहर की लड़ाई भले ही तलवारों, तोपों और राकेटों की रही हो, पर भीतर की लड़ाई तो सांस्कृतिक ही बनी रही। तलवार, तोप और राकेट नहीं लड़ते ; मनुष्य लड़ता है, मनुष्य के भीतर का मनुष्य। मध्ययुग में भी भीतर के मनुष्य को लड़ना पड़ा। लोकसंस्कृति ने ही विदेशी संस्कृतियों के हमलों को नाकाम किया।

प्रजातन्त्र के झण्डे के नीचे मूल्यों का युद्ध है। एक तरफ प्रजातांत्रिक मूल्य हैं यानी कि लोकमूल्य तो दूसरी तरफ एक व्यक्ति या जाति के, एक वर्ग या सम्प्रदाय के, सामंतवादी या साम्राज्यवादी मूल्य हैं। लेकिन लोक तो उन्हीं को अपनाकर लोकमूल्य बनाता है जो लोकहित में हों। लोक के लिए उपयोगी हों और लोक की रक्षा करते हों। लोकमूल्यों की मान्यता के साथ लोकाचरण भी जरूरी है और कथनी-करनी के इस समन्वित रूप का नाम ही लोकसंस्कृति है। लोकसंस्कृति जड़ वस्तु नहीं है। वह तो एक गतिशील जीवनधारा है, जो परिस्थितियों का सामना करती हुई अपने प्रवाहों को नई दिशा देती है और युग की आवश्यकताओं की सम्पूर्ति करती रहती है। इसलिए लोकसंस्कृति का अपना इतिहास भी है। हर युग की लोकसंस्कृति दूसरे युग में कुछ न कुछ भिन्न होती है।

-डॉ. नर्मदाप्रसाद गुप्त

सारी आधुनिक चिंता भारतेन्दु से रेणु तक लोकसंस्कृति से ही प्रभावित हुई। लोकसंस्कृति पहले आदिवासी, गुफावासी, बनवासी फिर घूमन्तू-यायावर संस्कृतियों में ; आयुधजीवी, मृगयाजीवी मानव से कृषिजीवी मानव बना ; वहां से जनपद बने, गणराज्य आए, यंत्र आए, औद्योगिक विकास हुआ। उत्पादन के साधन साध्य बने। विनिमय के, सम्प्रेषण के, यातायात के उपकरण बदले। इन सबने संस्कृति-विचार को प्रभावित किया। सामन्तवाद, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, साम्यवाद आदि ने संस्कृति के इतिहास को प्रभावित किया।

-डॉ. प्रभाकर माचवे

लोकसंस्कृति गांव की संस्कृति नहीं है। वह संस्कृति का वह स्तर है जहां जांच करने वाला, रचना करने वाला अनाम रहना चाहता है। जहां जातीय चेतना व्यक्ति चेतना में गुप्त रहती है। अत: इसकी सीमा यदि कुछ है तो इसकी निरंतरता, इसकी अविच्छिन्नता और इसकी लोक-प्रमाणशीलता।

-डॉ. विद्यानिवास मिश्र

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।